


11
 12
 13
 14
 15
 16
 17
 18
 19
 20
 21
 22
 23
 24
 25
 26
 27
 28
 29
 30
 31
 32
 33
 34
 35
 36
 37
 38
 39
 40
 41
 42
 43
 44
 45
 46
 47
 48
 49
 50
 51
 52
 53
 54
 55
 56
 57
 58
 59
 60
 61
 62
 63
 64
 65
 66
 67
 68
 69
 70
 71
 72
 73
 74
 75
 76
 77
 78
 79
 80
 81
 82
 83
 84
 85
 86
 87
 88
 89
 90
 91
 92
 93
 94
 95
 96
 97
 98
 99
 100
 101
 102
 103
 104
 105
 106
 107
 108
 109
 110
 111
 112
 113
 114
 115
 116
 117
 118
 119
 120
 121
 122
 123
 124
 125
 126
 127
 128
 129
 130
 131
 132
 133
 134
 135
 136
 137
 138
 139
 140
 141
 142
 143
 144
 145
 146
 147
 148
 149
 150
 151
 152
 153
 154
 155
 156
 157
 158
 159
 160
 161
 162
 163
 164
 165
 166
 167
 168
 169
 170
 171
 172
 173
 174
 175
 176
 177
 178
 179
 180
 181
 182
 183
 184
 185
 186
 187
 188
 189
 190
 191
 192
 193
 194
 195
 196
 197
 198
 199
 200
 201
 202
 203
 204
 205
 206
 207
 208
 209
 210
 211
 212
 213
 214
 215
 216
 217
 218
 219
 220
 221
 222
 223
 224
 225
 226
 227
 228
 229
 230
 231
 232
 233
 234
 235
 236
 237
 238
 239
 240
 241
 242
 243
 244
 245
 246
 247
 248
 249
 250
 251
 252
 253
 254
 255
 256
 257
 258
 259
 260
 261
 262
 263
 264
 265
 266
 267
 268
 269
 270
 271
 272
 273
 274
 275
 276
 277
 278
 279
 280
 281
 282
 283
 284
 285
 286
 287
 288
 289
 290
 291
 292
 293
 294
 295
 296
 297
 298
 299
 300
 301
 302
 303
 304
 305
 306
 307
 308
 309
 310
 311
 312
 313
 314
 315
 316
 317
 318
 319
 320
 321
 322
 323
 324
 325
 326
 327
 328
 329
 330
 331
 332
 333
 334
 335
 336
 337
 338
 339
 340
 341
 342
 343
 344
 345
 346
 347
 348
 349
 350
 351
 352
 353
 354
 355
 356
 357
 358
 359
 360
 361
 362
 363
 364
 365
 366
 367
 368
 369
 370
 371
 372
 373
 374
 375
 376
 377
 378
 379
 380
 381
 382
 383
 384
 385
 386
 387
 388
 389
 390
 391
 392
 393
 394
 395
 396
 397
 398
 399
 400
 401
 402
 403
 404
 405
 406
 407
 408
 409
 410
 411
 412
 413
 414
 415
 416
 417
 418
 419
 420
 421
 422
 423
 424
 425
 426
 427
 428
 429
 430
 431
 432
 433
 434
 435
 436
 437
 438
 439
 440
 441
 442
 443
 444
 445
 446
 447
 448
 449
 450
 451
 452
 453
 454
 455
 456
 457
 458
 459
 460
 461
 462
 463
 464
 465
 466
 467
 468
 469
 470
 471
 472
 473
 474
 475
 476
 477
 478
 479
 480
 481
 482
 483
 484
 485
 486
 487
 488
 489
 490
 491
 492
 493
 494
 495
 496
 497
 498
 499
 500
 501
 502
 503
 504
 505
 506
 507
 508
 509
 510
 511
 512
 513
 514
 515
 516
 517
 518
 519
 520
 521
 522
 523
 524
 525
 526
 527
 528
 529
 530
 531
 532
 533

کھڑا لیکن اب غصہ نہ ہوئے اس کی دستگیری طلبید علی محمد گیلانی نے اس سے جو کچھ بھی



پہلے اس دلشیں میں گئے کوئے کو
 پہلے اس دلشیں میں کرشن کے
 پہلے یہاں ہم سچے عشق تو
 پہلے بھارت میں گنگا کا اُور
 پہلے کیرت کا تیری کالوک مہنت
 پہلے کوہا کا دھرتی پر چھ مان
 پہلے پانڈو سے ویرن دھرت
 پہلے ارجن سا کوئی ان کا بھگت
 پہلے ویل کی سی مال تو پیر
 شری کرشن جہاں میں جمع تہ
 ہم کہتے ہو کرشن درہن پر اکبر

三

ہزاروں سال پہلے گوگل کی بری بھری وادیاں ہیں
 مہینہ کی یاد آگئے، ٹھہری تھی۔ اور سارا سنا سرتے
 مرتے ہی اٹھاتھا۔ بے جاں دھرتی سے سالن کی تھی
 ہوا میں بس لیف اور برہنہ کیا تھا اور فصاحتیں
 کھیتوں سے معمور ہو گئی تھیں زندگی نے امن اور
 سکون، عیش و راحت، سدا جاں اور راحت، درستی
 سے حمد و پائے باندھتے۔ حدیثوں کی بے انتہ
 اور گہری تاریکی جو آج ہے۔ اور بچہ گوگل کی
 داہن میں آٹا آیا تھا اور اس نے مارے
 سنا کو کھٹکے گا یا کھاتا۔

ہم کو یہ بھی ختم النسخہ بھی اور یہی جنم
الشمعی بار بار ہمیں ظاب و قلاں دیتی رہی اس لئے
ہمارے قلاں بازو ہیں وہ قوت پھر ہی کہ ہم نے
ہر معرکہ میں اپنی سہادی ائی ثلوث اور اربعہ
حالی

[illegible]

طالع
طالع
طالع

وہ گاندھی جی کی لڈر شپ ہے، لیکن
انہی ان کے روزانہ جیون میں کسی چیز سے
اسلامی اور وطنی اشیائی جیون نہ ہمارے
وطنی داسیوں کے انداز او کی سڑیپ
وطن کا درد اور وطنی سیرا کا جذبہ پیدا
کے جواب میں بھی گئی کرم لکھتے اور سڑتے
گتھ گتھ لکھنے بھی نہ تو دیکھیں قدر اہمیت
لو عظمت رکھتی تھی اے انہوں نے کیا بار
اپنی زندگی میں تباہی تباہی جب کہیں وہ خود کو
مشکل میں محسوس کرتے تھے وہ گتھ کی شرن
لاتے تھے۔ گاندھی جی کے نظروں میں گتھ
انسانی زندگی کے ہر شعبہ میں بہترین ہے
بہترین کھیتی ۵

DEVELOPMENT IN YOUR OWN HANDS. SHRINAGAR
A FREE HOLD RESIDENTIAL U.P. BORDER. SANCTIONED
FROM U.P. GOVERNMENT NATIONAL HIGH WAY
NAGAR

Span Son

DHAR GUPTA AND ASS
REGISTERED OFFICE M.3
KAILASH NEW DELHI. PHON
BRANCH OFFICE: BAG SUNDER

BUSHAN &
NEWS
AGENTS
TOURIST
RECEPTION
SRINAGAR

DURAN C.

مکمل اور خوش کے اعلیٰ سبطوں
میتوں پر خرید فرما میں :
پیر احمد علی صاحب دہلی

तू अर्जुनभी मैं परमेश्वरकी भक्ति तै उतपन्नहु ए ब्रह्मसाक्षात्कार करिकै अविद्यादिक सर्व उपाधियो तै रहितहु आ अभेदरूप करिकै मैं निगुण ब्रह्म कूंहीं प्राप्त होवैगा ॥ तहां श्रुति ॥ (यथानयः स्पंदमानाः समुद्रेऽस्तंगच्छंति नामरूपे विहाय ॥ तथा विद्वान्नामरूपा द्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्) ॥ अर्थ यह ॥ जैसे श्रीगंगायमुना दिक नदीयां आपणे नामरूप का परित्याग करिकै समुद्र विषे जाइके एकता भाव कूं प्राप्त होवैहैं ॥ तैसे यह विद्वान् पुरुष भी नामरूप तै रहितहु आ सर्व तै उत्कृष्ट स्वयं ज्योति परमात्मा पुरुष कूंहीं अभेदरूप करिकै प्राप्त होवैहै इति ॥ ईहां किसी टीका विषेतौ (मामेव आत्मानमेष्यसि) इस प्रकार तै पदों की योजना करिकै (आत्मानम्) इस पद करिकै परमात्मा काहीं ग्रहण कन्याहै इति ॥ ३४ ॥ * ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री स्वामि उद्धवानंद गिरि पूज्य पादशिष्येण स्वामि चिद् घनानंद गिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां नवमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ९ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशी विश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति नवमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ९ ॥



ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वरान्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्यभ्योनमः ॥ अथ दशमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्व सप्तम अष्टम नवम इन तिन अध्यायोंकरिके तत्पदार्थरूपपरमेश्वरका सोपाधिकस्वरूप तथानिरुपाधिकस्वरूप दिखाया ॥ तिसतत्पदार्थरूपपरमेश्वरकीजेविभूतियांहैं ॥ तेविभूतियां तिस सोपाधिकस्वरूपकेतौध्यानविषे उपायभूतहैं ॥ और तेविभूतियां तिसनिरुपाधिकस्वरूपकेतौ ज्ञानविषे उपायभूतहैं ॥ ऐसी परमेश्वरकीविभूतियांभी सप्तम अध्याय विषेतौ (रसोहमप्सुकौतेय) इत्यादिकवचनोंकरिके और नवम अध्यायविषेतौ (अहंकतुरहंयज्ञः) इत्यादिकवचनोंकरिके संक्षेपतैं कथनकरीयां ॥ तिन संक्षेपतैं कथनकरीहुई विभूतियोंका विस्तार अब अवश्यकरिके कहणेयोग्यहै ॥ काहेतैं कितनैकीबहिर्मुखलोकोंकूं सोपरमेश्वरकास्वरूपध्यानकरणेवासतैभी अत्यंतदु विज्ञेयहै ॥ ऐसेस्वरूपकाजो पुनःपुनःकथनहै सोतिसस्वरूपकेज्ञानवासतैहीहै ॥ याकारणतैं श्रीभगवान् नैं यह दशम अध्याय प्रारंभकरीता है ॥ तहां प्रथम अर्जुनकेचित्तविषे उत्साहकरावणेवासतैं परमरूपात्तु श्रीभगवान् विनाहींपूछेतैं ताअर्जुनकेप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ॥ यत्ते हं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितं काम्यया ॥ १ ॥ भूयः । एव । महाबाहो । शृणु । मे । परमं । वचः । यत् । ते । अहं । प्रीयमाणाय । वक्ष्यामि । हितं काम्यया ॥ १ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः भी मैंपरमेश्वरके उत्कृष्ट वचनकूं तूं श्रवणकर जोवचन मैंपरमेश्वर तुंमारे हितकी कामनाकरिके तैं^{११} प्रीतिवाँलेकेताई कैंथन करताहूं ॥ १ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहान् बाहुवाला अर्जुन तूं पुनःभी मैंपरमेश्वरके अत्यंत उत्कृष्ट वचनकूं श्रवणकर ॥ जोवचन मैंपरमआप्त परमेश्वर तुमारेइष्टकेप्राप्तिकीइच्छाकरिके तुमारेताई कथनकरताहूं ॥ अब अर्जुनकेप्रति तिसवचनकेउपदेशकरणेकीयोग्यताकेबोधनकरणेवासतै ताअर्जुनका विशेषणकहेहैं (प्रीयमाणाय इति) हेअर्जुन जैसे अमृतकेपानतैं प्रीतिकाअनुभवकरीताहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकेवचनरूपअमृतकेपानतैं तूं प्रीतिकूं अनुभवकरणेहारहैं ॥ यातैं तुमारेताई पुनःभी मैं उपदेशकरता हूं ॥ ईहां (प्रीयमाणाय) इसवचनकरिके श्रीभगवान् नैं यहअर्थ सूचनकन्या ॥ इनोकेवचनोंकूं श्रवणकरिके हमारेइष्टकीसिद्धि अवश्यकरिकेहोवैगी याप्रकारकी दृढभावनाकरिके जोपुरुष प्रीतिपूर्वक तिनवचनोंकूं श्रवणकरेहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेताईहीं तत्त्ववेत्तापुरुषनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा ॥ ताप्रीतितैरहित पुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याका उपदेशकरणानहीं इति ॥ और तिसवचनकाजो परमं यहविशेषणकथनकन्याहै ॥ तापरमविशेषणकरिके श्रीभगवान् नैं यह अर्थसूच तकन्याहै ॥ जिसकारणतैं यहहमारावचन अत्यंत उत्कृष्टहै ॥ तिसकारणतैं इसहमारेवचनकेश्रवणतैं तुमारेकूं अवश्यकरिके इष्टअर्थकीप्राप्ति होवैगी इति ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ शंका ॥ हे भगवन् ऐसे वचन तो पूर्व बहुतवार आप हमारे प्रति कथन करि आये हो ॥ तिन वचनों कूं पुनः अबी किस वासतै कथन करते हो ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए ॥ श्री भगवान् दुर्विज्ञेय वस्तु का पुनः पुनः उपदेश करने तैहीं बोध होवै है या प्रकार के अभिप्राय करिकै आपने स्वरूप की दुर्विज्ञेयता कूं कथन करे है ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हे भगवन् हमारे प्रति तै परमेश्वर के स्वरूप का उपदेश करने हारे इंद्रादिक देवता तथा भृगु आदिक ऋषि बहुत हैं ॥ तिनो के वचन श्रवण तैहीं हमारे कूं आपके स्वरूप का ज्ञान होवैगा ॥ इस विषे आपके कहने का क्या प्रयोजन है ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए ॥ जिन इंद्रादिको के वचन तै तूं हमारे स्वरूप का ज्ञान चाह ता हैं तिन इंद्रादिको कूं हीं हमारा स्वरूप दुर्विज्ञेय है इस अर्थ कूं अब श्री भगवान् कथन करे है ॥

(मू० श्लो०) न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ॥ अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥ २ ॥ न । मे । विदुः । सुरगणाः । प्रभवं । न । महर्षयः । अहम् । आदिः । हि । देवानां । महर्षीणां । च । सर्वशः ॥ २ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन मैं परमेश्वर के प्रभाव कूं इंद्रादिक देवता नहीं जानै हैं तथा भृगु आदिक महान् ऋषि भी नहीं जानै हैं जिस कारण तै मैं परमेश्वर तिन देवताओं का तथा तिन महान् ऋषियों का सर्व प्रकार तै कारण हूं ॥ २ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन मैं परमेश्वर का जो प्रभाव है ॥ अर्थात् आकाशादिक सर्व प्रपंच के उत्पत्ति स्थिति संहार प्रवेश नियमन निग्रह अनुग्रह इत्यादिको के करने का जो सामर्थ्य रूप प्रभाव है ॥ अथवा अनेक विभूतियों करिकै आविर्भाव रूप जो प्रभाव है ॥ तिस हमारे प्रभाव कूं इंद्रादिक देवता तथा भृगु आदिक महान् ऋषि सर्वज्ञ हुए भी जानते नहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् ते इंद्रादिक देवता तथा भृगु आदिक महान् ऋषि तिस आपके प्रभाव कूं किस कारण तै नहीं जानते हैं ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए ॥ श्री भगवान् ताके न जानने विषे हेतु कहै है (अहमादिर्हि इति) हे अर्जुन जिस कारण तै मैं परमेश्वर तिन इंद्रादिक देवताओं का तथा तिन भृगु आदिक महान् ऋषियों का सर्व प्रकार तै कारण हूं ॥ अर्थात् मैं परमेश्वर तिन इंद्रादिक देवताओं के तथा भृगु आदिक ऋषियों के उत्पादक पणे करिकै तथा बुद्धि आदिकों का प्रवर्तक पणे करिकै कारण हूं ॥ अथवा मैं परमेश्वर तिनो का उपादान रूप करिकै तथा निमित्त रूप करिकै कारण हूं ॥ तिस कारण तै ते इंद्रादिक देवता तथा भृगु आदिक ऋषि मैं परमेश्वर के कार्य होने तै कारण रूप मैं परमेश्वर के प्रभाव कूं जानि सकते नहीं ॥ जैसे पिता के प्रभाव कूं पुत्र जानि सकत नहीं ॥ या तै मैं परमेश्वर हीं आपणा प्रभाव तुमारे ताई कथन करता हूं ॥ तहां परमेश्वर तै हीं सर्व देवताओं तथा सर्व ऋषियों की उत्पत्ति होवै है ॥ यह वार्ता ॥ (तस्माच्च देवा बहुधा संप्रसूताः यस्मिन् युक्ता महर्षयो देवताश्च ॥) इत्यादि श्रुति यों विषे प्रसिद्ध हीं है इति ॥ २ ॥ * ॥ तहां सो परमेश्वर के प्रभाव का ज्ञान महान् फल का हेतु है ॥ या तै कोई क अधिकारी जन हीं तिस परमेश्वर के प्रभाव कूं जाने

है ॥ इसअर्थकू अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि जोकदाचित् आपपरमेश्वरकेप्रभावका उपदेशकरणेविषे समर्थनहीहैं ॥ तौ आपही हमारेप्रति ताआपणेप्रभावकाउपदेशकरौ ॥ परंतु तिसआपके प्रभावकेजानणे करिके हमारेकू कौनफलहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताज्ञानकाफल कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) योमामजमनादिचवेत्तिलोकमहेश्वरम् ॥ असंमूढःसमर्त्येषुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥३॥ यः । माम् । अजम् । अनादि । च । वेत्ति । लोकमहेश्वरम् । असंमूढः । सः । मर्त्येषु । सर्वपापैः । प्रमुच्यते ॥३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जन्मतैरहित तथा कारणतैरहित तथासर्वलोकोंकामहान्ईश्वर ऐसेमैंपरमेश्वरकू जोपुरुष जाने है सोपुरुष सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे संमोहतैरहितहुआ सर्वपापोंनै परित्यागैकरीताहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं सर्वजगत्काकारणहुं ॥ यातैं नहींविद्यमानहै आदि क्याकारण जिसका ताका नाम अनादिहै ॥ ऐसाअनादिरूप मैंपरमेश्वरहुं ॥ और अनादिहोणेतैंहीं मैंपरमेश्वर अजहुं ॥ अर्थात् उत्पत्तिरूप जन्मतैरहितहुं ॥ तथा सर्वलोकोंकामहेश्वरहुं ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरकू जोअधिकारीपुरुष आपणेआत्मासैंअभिन्नरूपकरिके साक्षात्कारकरेहै ॥ सोपुरुष सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे असंमूढहुआ अर्थात् अज्ञानकीनिवृत्तिद्वारा आत्माअनात्माकेतादात्म्यअध्यास रूप संमोहतैरहितहुआ सर्वपापोंतैंमुक्तहोवैहै ॥ अर्थात् बुद्धिपूर्वककन्येहुए तथाअबुद्धिपूर्वककन्येहुए भूत भविष्यत् वर्तमान सर्वपापोंतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष मुक्तहोवैहै ॥ ईहां (प्रमुच्यते) इसवचनविषेस्थितजो प्र यहशब्दहै ॥ ताप्रशब्दकरिके श्रीभगवान् नैं यहअर्थ सूचनकन्या ॥ यद्यपि अज्ञानीपुरुषभी तिनपापकर्मोंके भोगकरिके तथाप्रायश्चित्तकरिके तिनपापकर्मोंतैंमुक्तहोवैहैं ॥ तथापि तेअज्ञानीपुरुष ताकरिके तिनपापकर्मोंतैं अत्यंतमुक्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं सर्वपापकर्मोंकाकारणरूप जोअज्ञानहै ॥ तथा ताअज्ञानकृतजो देहादिकोंविषे अहंममअध्यासहै ॥ सोअज्ञान तथाअध्यास तिनअज्ञानीपुरुषोंविषे विद्यमानहै ॥ तिसतैं पुनः पापोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और भोगकरिकेनिवृत्तहुएभी तेपापकर्म संस्काररूपतैं तिनअज्ञानीपुरुषोंविषे बनैरहेहैं ॥ याकारणतैंहीं तिनसंस्कारोंकेवशतैं तेअज्ञानीपुरुष पुनः तिनपापकर्मोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और तत्त्ववेत्तापुरुषतौ आत्मसाक्षात्कारकरिके अज्ञानरूपमूलकारणकी तथातत्जन्यअहंममअध्यासकी तथासंस्कारसहितसर्वपापकर्मोंकी निःशेषतैं निवृत्तिहोइजावैहै ॥ यातैं सोतत्त्ववेत्तापुरुषहीं तिनसर्वपापकर्मोंतैं अत्यंतमुक्तहोवैहै ॥ इसअर्थविषे ॥ (क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन् दृष्टेपरावरे ॥ ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतिवचन प्रमाणरूपहैंइति ॥ ३ ॥ * ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे

(लोकमहेश्वरम्) इसवचनकारिकै श्रीभगवान् नैं आपणविषे सर्वलोकोंकामहेश्वरपणा कथनकन्या ॥ अब तिसी सर्वलोकमहेश्वरपणेकूं विस्तारतैं प्रतिपादनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) बुद्धिज्ञानमसंमोहः क्षमासत्यंदमः शमः ॥ सुखंदुःखं भवोभावोभयंचाभयमेव च ॥ ४ ॥ अहिंसासमतातुष्टिस्तपोदानं यशोऽयशः ॥ भवंतिभावाभूतानांमत्तएवपृथग्विधाः ॥ ५ ॥ बुद्धिः । ज्ञानम् । असंमोहः । क्षमा । सत्यम् । दमः । शमः । सुखम् । दुःखम् । भवः । भावः । भयम् । च । अभयम् । एव । च । अहिंसा । समता । तुष्टिः । तपः । दानम् । यशः । अयशः । भवंति । भावाः । भूतानाम् । मत्तः । एव । पृथग्विधाः ॥ ४ ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन बुद्धि ज्ञान असंमोह क्षमा सत्य दम शम सुख दुःख भव भाव भय तथा अभय अहिंसा समता तुष्टि तप दान यश अयश यहलोकप्रसिद्ध नानाप्रकारके कार्यविशेष सर्व प्राणीयोके मैपरमेश्वरतैं हीं उत्पन्नहोवैहैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वप्राणीयोके यहबुद्धितैंआदिलैके अयशपर्यंत कार्यविशेष मैपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहोवैहैं अन्यकिसीतैंउत्पन्नहोवैनहीं ॥ अब तिनबुद्धिआदि कोंकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहां अंतःकरणविषे जोसूक्ष्मअर्थकेविवेककरणेकासामर्थ्यहै ताकानाम बुद्धिहै ॥ और आत्मा अनात्मरूप सर्वपदार्थोंकाजोअवबोधहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और ज्ञातव्यतारूपकरिकै अथवा कर्तव्यतारूपकरिकै प्राप्तभयेजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंविषे व्याकुलतातैंरहितहोइके जाविवेकपूर्वक प्रवृत्तिहै अर्थात् ताकेइष्टअनिष्टरूपफलकेविचारपूर्वक जाप्रवृत्तिहै ताकानाम असंमोहहै ॥ और कठोरवाणी करिकै अथवा दंडादिकोंकरिकै ताडनकन्येहुएपुरुषकेचित्तका जोनिर्विकारपणाहै अर्थात् तिसताडनकरणेहारेप्राणीकेअनिष्टकानहींचिंतनकरणाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ अथवा आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक यातीन प्रकारकेउपद्रवोंके सहनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम क्षमाहै ॥ तहां ज्वरादिकरोग आध्यात्मिकउपद्रव कहेजावैहैं ॥ और अतिशीत अतितप्त अतिवर्षा इत्यादिक आधिदैविकउपद्रव कहेजावैहैं ॥ और सर्प व्याघ्र शत्रुइत्यादिकआधिभौतिकउपद्रव कहेजावैहैं इति ॥ और प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै जोअर्थ जिसप्रकारतैं निश्चयकन्याहै तिसअर्थकूं तिसीप्रकारतैं कथनकरणा याकानाम सत्यहै ॥ और श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकी जाशब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तिहै ताकानाम दमहै ॥ और अंतःकरणकी जातिनशब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तिहै ताकानाम शमहै ॥ और केवलधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथाअनुकूलतारूपकरिकैहीं सर्व प्राणीयोकेज्ञानकाविषय ऐसाजोआनंदहै ताकानाम सुखहै ॥ और केवलअधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथाप्रतिकूलतारूपकरिकैहीं सर्वप्राणीयोकेज्ञानकाविषय ऐसाजोपरितापहै ताकानाम दुःखहै ॥ और उत्पत्तिकानाम भवहै ॥ और सत्ताकानाम भावहै ॥ अथवा (भवोभावः) इसवचनविषे भवःअभावः याप्रकारका

पदच्छेदकरणा ॥ तहां असत्ताकानाम अभावहै ॥ और त्रासकानाम भयहै ॥ त्रासतैरहितहोनेकानाम अभयहै ॥ ईहां (भयंचाभयमेवच) इसवचनविषे स्थित प्रथमचकारतौ पूर्वउक्तबुद्धिआदिकोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ और दूसराचकारतौ पूर्वनहींकथनकयेहुए बुद्धिआदिकोंकेविरोधी अबुद्धि अज्ञान संमोह अक्षमा असत्य इत्यादिकोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ और एव यहशब्द तिनबुद्धिआदिकोंविषे सर्वलोकप्रसिद्धताके बोधनकरणेवासतैहै ॥ अर्थात् यहबुद्धि आदिक सर्वलोकविषेप्रसिद्धहींहैं इति ॥ और स्थावरजंगमसर्वप्राणीयोंकीपीडातैजानिवृत्तिहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ अर्थात् शरीरमनवाणीकरिके जोकिसीभी प्राणीमात्रकूं पीडाकीनहींप्राप्तिकरणी ताकानाम अहिंसाहै ॥ और इष्टवस्तुके तथाअनिष्टवस्तुके प्राप्तहुएभी जाचित्तकी रागद्वेषादिकोंतैरहितअवस्थाहै ॥ ताका नाम समताहै ॥ और प्रारब्धकर्मकेवशतै यत्किंचित्भोग्यपदार्थोंकेप्राप्तहुए इतनैपदार्थोंकरिकेहीं हमारेकूं तृप्तिहै याप्रकारकीजाअलंबुद्धिहै ॥ जिसकूं संतोषकहे हैं ताकानाम तुष्टिहै ॥ और शास्त्रउपदिष्टमार्गकरिके जोशरीरइंद्रियोंकाशोषणहै अर्थात् कृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतोंकरिके जोशरीरइंद्रियोंके बलकीक्षीणताकरणी है ताकानाम तपहै ॥ और उत्तमदेशकालविषे सत्पात्रविषे श्रद्धाकरिके यथाशक्तिपरिमाण जो अन्नसुवर्णादिकपदार्थोंकासमर्पणहै ताकानाम दानहै ॥ और धर्मरूप निमित्ततै उत्पन्नभईजा लोकविषे प्रशंसादिरूपप्रसिद्धिहै ताकानाम यशहै ॥ और अधर्मरूपनिमित्ततै उत्पन्नभईजा लोकविषेनिंदारूपप्रसिद्धिहै ताकानाम अयशहै यह बुद्धितैआदिलैकेअयशपर्यंत जेकार्यविशेषहैं ॥ जेबुद्धिआदिककार्य धर्मअधर्मादिकसाधनोंकीविचित्रताकरिके नानाप्रकारकेहैं ॥ ऐसेसर्वप्राणीयोंके बुद्धिआदिकपदार्थ आपणेआपणेकारणोंसहित मैपरमेश्वरतैहींउत्पन्नहोवैहैं ॥ अन्यकिसीतै तेबुद्धिआदिक उत्पन्नहोवैनहीं ॥ ऐसेसर्वकेकारणरूप मैपरमेश्वरविषे तिनसर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन केवलबुद्धिआदिकोंकाकारणहोणेतै मैपरमेश्वरविषे सोसर्वलोकोंका महेश्वरपणा नहींहैं ॥ किंतु भृगुआदिकमहान्ऋषियोंका तथास्वयंभुवादिकमनुवोंका कारणहोणेतैभी मैपरमेश्वरविषे सोसर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) महर्षयःसप्तपूर्वचत्वारोमनवस्तथा ॥ मद्भावामानसाजातायेषांलोकइमाःप्रजाः ॥ ६ ॥ महर्षयः । सप्त । पूर्वे । चत्वारः । मनवः । तथा । मद्भावाः । मानसाः । जाताः । येषां । लोके । इमाः । प्रजाः ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सृष्टिकेआदिका लविषे उत्पन्नहुए जेभृगुआदिकसप्त महाऋषिहैं तथा सावर्णीआदिकच्यारि मनुहैं जेभृगुआदिक मैपरमेश्वरकेचितनपरायणहैं तथा मनकेसंकल्पमात्रतै उत्पन्नहुएहैं तथा जिनभृगुआदिकोंकी ईसलोकविषे यह ब्राह्मणादिकप्रजाहै ॥ तेभृगुआदिकभी मैपरमेश्वरतैहीं उत्पन्नहुएहैं ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुए जेभृगुआदिकसप्त महाऋषिहैं कैसेहैंतेभृगुआदिकसप्तऋषिवेदोंकेपाठकूं तथावेदोंकेअर्थकूं भलीप्रकारतैजान
 नेहारेहैं ॥ तथा सर्वज्ञहैं ॥ तथा वेदविद्याकेसंप्रदायकी प्रवृत्तिकरणेहारेहैं ॥ याकारणतैहीं तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकूं शास्त्रविषे महाऋषिकहेहैं ॥ तहां
 तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकेनाम तथासृष्टिकेआदिकालविषे तिनोंकीउत्पत्ति पुराणोंविषेभी कथनकराहै ॥ तहांश्लोक ॥ (भृगुमरीचिमन्त्रिचपुलस्त्यंपुलहं
 क्रतुम् ॥ वसिष्ठंचमहातेजाःसोमसृजन्मनसासुतान्) अर्थयह ॥ भृगु मरीचि अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु वसिष्ठ इनसप्तऋषिरूपपुत्रोंकूं सोमहान्तेजवालाब्रह्मा
 सृष्टिकेआदिकालविषे आपणेमनकरिकै उत्पन्नकरताभया इति ॥ तथा सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नहुएजे सावर्णीआदिकनामकरिकैप्रसिद्धचारिमनुहैं ॥ अथवा
 (महर्षयःसप्त) इसवचनकरिकैतौ भृगुआदिकसप्तमहाऋषियोंकाग्रहणकरणा ॥ और (पूर्वचत्वारः) इसवचनकरिकै तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंतैभीपूर्वउक्तहुए
 सनकादिकचारिमहाऋषियोंकाग्रहणकरणा ॥ और (मनवस्तथा) इसवचनकरिकै स्वायंभुवआदिकचतुर्दशमनुवोंकाग्रहणकरणा इति ॥ कैसेहैंतेभृगुआदिक
 सर्व मद्भावाहैं ॥ तहां मैपरमेश्वरविषेहैं भाव क्या भावना जिनोंकी तिनोंकानाम मद्भावाहैं ॥ अर्थात् मैपरमेश्वरकाचितनरूपभावनाकेवशतै आविर्भूतहुआहै
 मैपरमेश्वरकाज्ञान तथाऐश्वर्य तथानानाप्रकारकीशक्तियां जिनोंकूं ॥ पुनःकैसेहैंतेभृगुआदिक मानसाहैं ॥ अर्थात् ब्रह्माकेमनकेसंकल्पमात्रतैहीं उत्पन्नहुएहैं ॥
 अन्यमनुष्योंकीन्याई योनितैउत्पन्नहुएनहीं ॥ इसीकारणतैहीं विशुद्धजन्मवालेहोणेतै तेभृगुआदिकसर्वप्राणीयोतै श्रेष्ठहैं ॥ और शास्त्रविषे (योनिंविनाशरीरम्)
 यहजोवचनकहाहै ॥ सो इसवचनविषे योनिशब्द स्त्रीकेयोनिवाचकनहीहैं ॥ किंतु सोयोनिशब्द कारणकावाचकहै ॥ अर्थात् कारणतैविना शरीर उत्प
 न्नहीहोवैहै इति ॥ ऐसेभृगुआदिकसप्तमहाऋषि तथासनकादिकचारिमहाऋषि तथास्वायंभुवादिकचतुर्दश मनु यहसर्व सृष्टिकेआदिकालविषे हिरण्यगर्भरूपमें
 परमेश्वरतैहीं उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ जिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकी तथासनकादिकचारिमहाऋषियोंकी तथास्वायंभुवादिकचतुर्दशमनुवोंकी इसलोकविषे जन्म
 करिकै तथाविद्याकरिकै यहब्राह्मणादिकसर्वप्रजा संततिरूपहैइति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौ (लोकइमाः) इसवचनविषे लोकःयहप्रथमाविभक्तिअंतपद ग्रह
 णकरिकैयहअर्थक-याहै ॥ जिनभृगुआदिकोंकीयहजरायुजादिकचारिप्रकारकीप्रजा तथाताप्रजाकेनिवासकाआधारभूतयहलोक दोनों संततिरूपहैं इति ॥ अ
 थवा (येषां) यहषष्ठीविभक्ति येभ्यः इसपंचमीविभक्तिकेअर्थविषेहै ॥ यातै यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ जिनभृगुआदिकोंतै यहजरायुजादिकचारिप्रकारकीप्रजा
 तथायहलोक उत्पन्नहोताभयाहै ॥ ऐसेभृगुआदिकोंकाभीकारणरूप मैपरमेश्वरविषे सर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इति ॥ ६ ॥ * ॥
 इसकारणतै सोपाधिकपरमेश्वरके प्रभावकूंकथनकरिकै अब तिसप्रभावकेज्ञानकाफल कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) एतां विभूतियोगं च मयो वेत्ति तत्त्वतः ॥ सोऽविकंपेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥ ७ ॥ एताम् । विभूतिम् । यो
गम् । च । मम । यः । वेत्ति । तत्त्वतः । सः । अविकंपेन । योगेन युज्यते । न । अत्र । संशयः ॥ ७ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अ
र्जुन जो पुरुष मैं परमेश्वर के इस पूर्व उक्त विभूतिकुं तथा योगकूं यथावत् जानै है सो पुरुष अचल योगकरिके युक्त होवै है इस
विषे कोई भी प्रतिबंधक नहीं है ॥ ७ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन पूर्व (बुद्धिज्ञानम्) इत्यादिक तीन श्लोकों करिके कथन करी हुई जा बुद्धितैं आदिले के अयशपर्यंत मैं परमेश्वर की विभूति है ॥ तथा भृगु आदिक
सप्त महा ऋषिरूप तथा सनकादिक चारि महा ऋषिरूप तथा स्वायंभुवादिक चतुर्दश मनुरूप जा हमारी विभूति है ॥ अर्थात् तिस तिस बुद्धि आदिरूप करिके तथा तिस तिस
महा ऋषि आदिरूप करिके जा मैं परमेश्वर की स्थिति है ऐसी मैं परमेश्वर की विभूतिकुं जो अधिकारी पुरुष गुरु शास्त्र के उपदेश तैं यथावत् जाने है ॥ तथा जो अधिकारी पुरुष
मैं परमेश्वर के योगकूं यथावत् जाने है ॥ ईहां तिस तिस अर्थ के उत्पन्न करने का सामर्थ्य रूप जो परमेश्वर है ॥ ताका नाम योग है ऐसे परमेश्वर रूप योगकूं जो पुरुष जाने है ॥
सो अधिकारी पुरुष चलायमान ता तैं रहित योग करिके युक्त होवै है ॥ अर्थात् सो पुरुष तत्त्वज्ञान की स्थिरता रूप समाधिकरिके युक्त होवै है ॥ हे अर्जुन इस हमारी
विभूतिके तथा योग के जानने हारे पुरुषकूं ता समाधिरूप योग की प्राप्ति विषे कोई भी संशय नहीं है अर्थात् कोई भी प्रतिबंध करने हारा नहीं है इति ॥ ७ ॥ * ॥ तहां
परमेश्वर के जिस विभूति योग दोनों के ज्ञान करिके इस अधिकारी पुरुषकूं अचल समाधिरूप योग की प्राप्ति होवै है ॥ तिस ज्ञान के स्वरूपकूं अब श्री भगवान् चारि
श्लोकों करिके वर्णन करे है ॥

(मू० श्लो०) अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ॥ इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥ ८ ॥ अहं । सर्वस्य । प्रभवः । मत्तः ।
सर्वं । प्रवर्तते । इति । मत्वा । भजन्ते । मां । बुधाः । भावसमन्विताः ॥ ८ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन मैं परमेश्वर हीं सर्व जगत् के उ
त्पत्तिकारण हूं तथा मैं परमेश्वर तैं हीं सर्व प्रवृत्त होवै हैं इस प्रकार तैं मानिकरिके बुद्धिमान् जन प्रेम रूप भाव करिके युक्त हुए मैं परमेश्वर
कूं आराधन करे हैं ॥ ८ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन वासुदेव नामा मैं परब्रह्म हीं इस सर्व जगत् के उत्पत्तिकारण हूं ॥ अर्थात् मैं परमेश्वर हीं इस सर्व जगत् का उपादान कारण रूप हूं तथा निमित्त कारण
रूप हूं ॥ तथा इस जगत् के स्थिति नाश आदिक सर्व व्यवहार भी मैं परमेश्वर तैं हीं प्रवर्त होवै है ॥ अर्थात् सर्व शक्तिसंपन्न तथा सर्वज्ञ ऐसे मैं अंतर्ग्रामी परमेश्वर करिके प्रेरणा

कन्याहुआ यह सूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत् आपणीआपणीभयादाका नहींउलंघनकरिके प्रवर्तहोवैहै ॥ अथवा प्रत्यक्षसाक्षीआत्मारूपमैंपरमेश्वरकीसत्तास्फूर्तिकंपाइके यहबुद्धिइंद्रियादिकसर्वप्रपंच नानाप्रकारकीचेष्टाकूंकरेहै ॥ इसप्रकारके मैंपरमेश्वरकेस्वरूपकूं जानिकारिकेविवेककरिकेजान्याहैतत्त्ववस्तुजिनोंने ऐसेबुद्धिमान्पुरुष परमार्थतत्त्वकाग्रहणरूपप्रेमरूपभावकरिकेयुक्तहुए मैंपरमेश्वरकूं भजेहैं ॥ अर्थात् नित्य निरंतर मैंपरमेश्वरकाहीं चिंतनकरेहैं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोआपका प्रेमपूर्वकभजन कैसाहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसप्रेमपूर्वकभजनकास्वरूप वर्णनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) मच्चित्तामद्गतप्राणाबोधयंतःपरस्परम् ॥ कथयंतश्चमानित्यंतुष्यंतिचरमंतिच ॥ ९ ॥ मच्चित्ताः । मद्गतप्राणाः । बोधयंतः । परस्परं । कथयंतः । च । माम् । नित्यं । तुष्यंति । च । रमंति । च ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेहै चित्त जिनोका तथा मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहुएहैप्राणजिनोके तथा परस्पर मैंपरमेश्वरकाहीं बोधनकरतेहुए तथा नित्यहीं मैंपरमेश्वरकूं कथन करतेहुए तेहमारभक्त संतोषकूं प्राप्तहोवैहै तथा सुखकूंअनुभवकरेहैं ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेहींहैचित्तजिनोका तिनोंकानाम मच्चित्ताहै ॥ अथवा मैंपरब्रह्महींहैचित्तविषेजिनोके तिनोंकानाम मच्चित्ताहै ॥ अर्थात् जेपुरुष चित्तकरिके मैंपरमेश्वरकाहीं सर्वदा चिंतनकरेहैं ॥ और मैंपरमेश्वरकूं हींप्राप्तहुएहैं प्राण क्या चक्षुआदिकइंद्रिय जिनोके तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेवासतैहींहै चक्षुआदिकइंद्रियोंकाव्यापार जिनोके तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अथवा बाह्यविषयोंतैनिवृत्तकरिके ॥ मैंपरमेश्वरविषेहीं लयकरेहैं चक्षुआदिकसर्वकरणजिनोंने तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अथवामैंपरमेश्वरके भजन अर्थहै प्राण क्या जीवन जिनोका अन्यकिसीप्रयोजनवासतै जिनोकाजीवनहैनहीं तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ तथा जेपुरुष विद्वान्पुरुषोंकीसभाविषे श्रुतिवचनोंकरिके तथाश्रुतिअनुकूलयुक्तियोंकरिके अन्योन्य मैंपरमेश्वरकाहीं बोधनकरेहैं ॥ तथा जेपुरुष नित्यप्रति आपणेश्रद्धावान्शिष्योंकेताई मैंपरमेश्वरकाहीं ज्ञेयरूपकरिके तथाध्येयरूपकरिके उपदेशकरेहैं ॥ इसप्रकार मैंपरमेश्वरविषेजोचित्तकाअर्पणहै तथाबाह्यनेत्रादिककारणोंकाअर्पणहै तथाआपणेजीवनकाअर्पणहै तथास्वसमानपुरुषोंका जोपरस्पर मैंपरमेश्वरकाबोधनहै तथा आपणेतैन्यूनबुद्धिवालेशिष्योंकेताई जोमैंपरमेश्वरकाउपदेशकरणाहै यहहीं मैंपरमेश्वरकाभजनहै ॥ इसप्रकारके मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकेहीं तेविद्वान्पुरुष तोषकूं प्राप्तहुएहैं ॥ अर्थात् इस परमेश्वरकेभजनकीप्राप्तिकरिकेहीं हम कृतकृत्यहूएहैं इसभगवद्भजनतैअन्य कोईभीपदार्थ हमारेइष्टकासाधन नहींहै इसप्रकारकेज्ञानरूप संतोषकूं प्राप्तहुएहैं ॥ तथा तिससंतोषकरिकेहीं तेविद्वान्जन सर्वतैउत्तमसुखकूं अनुभवकरेहैं ॥ संतोषकरिकेहींउत्तमसुखकीप्राप्ति होवैहै यहवार्ता पतंजलिभग

वान् नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (संतोषादनुत्तमः सुखलाभः इति) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकूं तिससंतोषतैंहीं सर्वतैंउत्तमसुखकी प्राप्तिहोवैहै इति ॥ यहवार्ता पुराणविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यच्चकामसुखंलोकेयच्चदिव्यमहत्सुखम् ॥ तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशीकलाम्) ॥ अर्थयह ॥ इसलोकविषे जितनाकी विषयजन्यसुखहै तथास्वर्गादिकलोकोंविषे जितनाकी विषयजन्यमहान्दिव्यसुखहै ॥ तेसर्वसुख तृष्णाकीनिवृत्तिरूपसंतोषजन्यसुखके षोडशवेंभोगकेतुल्यभीनहींहोवैहै इति ॥ ९ ॥ * ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन इसपूर्वउक्तप्रकारतैं मैपरमेश्वरकाभजनकरेहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंकूं मैपरमेश्वरभी तिसबुद्धियोगकीप्राप्तिकरिक्के आपणेनिर्गुणस्वरूपकीहीं प्राप्तिकरूंहूं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तेषांसततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ॥ ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयांतिते ॥ १० ॥ तेषां । सततयुक्तानां । भजतां । प्रीतिपूर्वकम् । ददामि । बुद्धियोगं । तं । येन । माम् । उपयांति । ते ॥ १० ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैपरमेश्वरविषेहैए काग्रबुद्धिजिनोंकी तथा प्रीतिपूर्वकं मैपरमेश्वरकाभजनकरणेहारे तिनभक्त जनोंके तिसपूर्वउक्त बुद्धियोगकूं मैपरमेश्वर उत्पन्नकरूंहूं जिसबुद्धियोगकरिक्के तैभक्तजन मैपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिक्के प्राप्तहोवैहैं ॥ १० ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्व (मच्चित्तमद्रतप्राणाः) इसश्लोककरिक्के कथनकन्याजो मैपरमेश्वरकेभजनकाप्रकारहै ॥ तिसप्रकारकरिक्के जेपुरुष मैपरमेश्वरकाभजन करेहैं ॥ तथा सर्वकालविषे मैपरमेश्वरविषेहैएकाग्रबुद्धिजिनोंकी ॥ इसीकारणतैंहीं जेपुरुष लाभ पूजा ख्याति इत्यादिक लौकिकप्रयोजनोंकीनहीं इच्छा करतेहुए अत्यंतप्रीतिपूर्वक एकमैपरमेश्वरकाहीं भजनकरेहैं ॥ तिनभक्तजनोंके तिसपूर्वउक्तबुद्धियोगकूं मैपरमेश्वरहीं उत्पन्नकरूंहूं ॥ अर्थात् (सोऽविकंपेनयोगेनयुज्यते) इसवचनकरिक्के पूर्व कथनकन्याजो मैपरमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकूंविषयकरणेहारा सम्यक्दर्शनरूपबुद्धियोगहै ॥ तिसबुद्धियोगकूं मैपरमेश्वरहीं उत्पन्नकरूंहूं ॥ शंका ॥ हेभगवान् तिसबुद्धियोगकरिक्के तिनअधिकारीजनोंकूं कौनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताबुद्धियोगकाफल कथनकरेहै (येनमामुपयांतितेइति) हेअर्जुन जिसबुद्धियोगकरिक्के तेहमारेभक्तजन मैपरमेश्वरकूंहीं आपणाआत्मारूपकरिक्के प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् जैसे घटरूपउपाधिके निवृत्तहुए घटाकाश अभेदरूपकरिक्के महाकाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जैसेश्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेआपणेनामरूपकापरित्यागकरिक्के समुद्रविषेअभेदभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे तेहमारेभक्तजनभी हमारीभक्तिकरिक्केउत्पन्नहुए तत्त्वसाक्षात्कारकरिक्के मैपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिक्केप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् मैअद्वितीयनिर्गुणपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहींजानेहैं इति ॥ १० ॥ * ॥ तहां आपणेभक्तजनोंकेप्रति परमेश्वरनैं प्राप्तकन्याजो तत्त्वज्ञानरूपबुद्धियोगहै ॥ सोबुद्धियोग जिस

अज्ञानकीनिवृत्तिरूपव्यापारवालाहुआ आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिरूपफलकी प्राप्तिकरेहै ॥ तिसमध्यवर्तीव्यापारकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तेषामेवानुकंपार्थमहमज्ञानजंतमः ॥ नाशयाम्यात्मभावस्थोज्ञानदीपेनभास्वता ॥ ११ ॥ तेषाम् । एव । अनुकं
पार्थम् । अहम् । अज्ञानजम् । तमः । नाशयामि । आत्मभावस्थः । ज्ञानदीपेन । भास्वता ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन तिनभक्तजनोंके । हीं अनुग्रहअर्थ तिनोके आत्माकारवृत्तिविषेस्थितहुआ मैंपरब्रह्म चिदाभासयुक्त तिसंवृत्तिज्ञानरूप
दीपककरिकै तिनोके अज्ञानजन्य आवरणरूपतमकूं नाशकरूं ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तरीतिसैं जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकाभजनकरेहैं तिनभक्तजनोंकेहीं अनुकंपाअर्थ अर्थात् इनहमारेभक्तजनोंका किसीभीप्रकारक
रिकै श्रेयहोवै याप्रकारकेअनुग्रहवासतैं मैंस्वप्रकाश चैतन्य आनंदअद्वितीयरूप प्रत्यक्आत्मा तिनभक्तजनोंके आत्मभावविषेस्थितहुआ अर्थात् तिनभक्तज
नोंकी महावाक्यतैंजन्य जाआत्माकार अंतःकरणकीवृत्तिहै तावृत्तिविषे विषयतारूपकरिकैस्थितहुआ तिसीहीं चिदाभासयुक्त अंतःकरणकी वृत्तिरूपज्ञानदीप
करिकै अज्ञानजन्यतमकूं नाशकरूं ॥ अर्थात् अज्ञानहैउपादानकारणजिसका ऐसाजो मिथ्याज्ञानरूप आत्माविषयक आवरणरूपअंधकारहै तिसआवरणरू
पतमकूं ताकेउपादानकारणरूपअज्ञानकानाशकरिकै नाशकरूं ॥ काहेतैं लोकप्रसिद्ध सर्वभ्रमस्थलविषे तिसभ्रमकाउपादानकारणजोअज्ञानहै सोअज्ञान अ
धिष्ठानकेज्ञानकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ अन्यकिसीउपायकरिकै सोअज्ञाननिवृत्तहोवैनहीं ॥ जैसे सर्परजतादिरूपभ्रमका उपादानकारणजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञान
रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानकेज्ञानकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ अन्यकिसीउपायकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ तथा सर्वस्थलविषे उपादानकारणकेनाश
करिकै उपादेयरूपकार्यकाभी अवश्यकरिकैनाशहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकातंतुआदिकउपादानकारणकेनाशकरिकै उपादेयरूपघटपटादिककायोंकाभी अवश्यकरिकैनाश
होवैहै ॥ तैसे आत्माकारअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानकरिकै अज्ञानरूपउपादानकारणकेनाशहुएतैं तिसतमरूपउपादेयकानाशभी अवश्यकरिकैहोवैहै इति ॥
ईहां (ज्ञानदीपेन) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् नैं आत्मज्ञानविषे दीपककीसादृश्यतारूप रूपालंकार कथनकन्या ॥ तारूपालंकारकरिकै श्रीभगवान् नैं
यहअर्थ सूचनकन्या ॥ जैसे दीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्तिकरणविषे केवल तन्दीपककीउत्पत्तिमात्रहीं अपेक्षितहोवैहै तिसदीपककीउत्पत्तितैंभिन्न दूसरे
किसीकर्मकी अथवाअभ्यासकी अपेक्षाहोवैनहीं ॥ और तादीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्तिहुएतैंअनंतर पूर्वविद्यमानघटादिकवस्तुवोंकीहीं अभिव्यक्तिहोवैहै ॥
पूर्वनहींउत्पन्नहुईकिसीवस्तुकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिकरणविषे तिसआत्मज्ञानकीउत्पत्तिमात्रहीं अपेक्षितहोवैहै ॥ तिसआ

त्मज्ञानकी उत्पत्ति तैत्तिरीय दूसरे किसी कर्मकी अथवा अभ्यासकी अपेक्षा होवै नहीं ॥ और ता आत्मज्ञान करिके अज्ञानकी निवृत्ति तैत्तिरीय अनंतर पूर्वविद्यमान हुए हीं ब्रह्मभाव रूपमोक्षकी अभिव्यक्ति होवै है ॥ कोई पूर्व नहीं उत्पन्न हुए मोक्षकी तिस आत्मज्ञान तैत्तिरीय उत्पत्ति होवै नहीं ॥ जिस उत्पत्ति करिके तिस मोक्षविषे भी स्वर्गादिक फलोंकी न्यांई नाशवत्ता अथवा कर्मादिकोंकी अपेक्षा होवै इति ॥ और (भास्वता) इस वचन करिके श्रीभगवान् ने यह अर्थ सूचन कन्या ॥ जैसे वायु तैरहित दे शविषे स्थित प्रकाशमान दीपकविषे तीव्रपवनादिक प्रतिबंधक होवै नहीं ॥ तैसे मैं परमेश्वरकी भक्ति करिके प्राप्त हुए आत्मज्ञानविषे असंभावनादिक दोष प्रति बंधक होवै नहीं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ इस प्रकार तैत्तिरीय परमेश्वरके विभूतिकूं तथा योगकूं सामान्य तैत्तिरीय श्रवण करिके पुनः विशेष करिके ता विभूतियोगके श्रवण करनेकी परम उत्कंठा कूं प्राप्त हुआ जो अर्जुन प्रथम श्रीभगवान् की स्तुतिकूं करे है ॥

(मू० श्लो०) अर्जुन उवाच ॥ परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् । पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ॥ १२ ॥ आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षि नारदस्तथा । असितो देवलो व्यासः स्वयंचैव ब्रवीषि मे ॥ १३ ॥ परं । ब्रह्म । परं । धाम । पवित्रं । परमं । भवान् । पुरुषं । शाश्वतं । दिव्यम् । आदिदेवम् । अजं । विभुम् । आहुः । त्वाम् । ऋषयः । सर्वे । देवर्षिः । नारदः । तथा । असितः । देवलः । व्यासः । स्वयं । चैव । एव । ब्रवीषि । मे ॥ १२ ॥ १३ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे भगवन् परं ब्रह्म तथा परं धाम तथा परं पवित्रं आप हीं हो जिस कारण तैत्तिरीय भृगु आदिक सर्व ऋषि तथा देवर्षि नारद तथा असित तथा देवल तथा व्यास यह सर्व हमारे तांई तुम्हारे कूं पुरुष शाश्वत दिव्य आदिदेव अज विभु रूप कथन करे हैं तथा साक्षात् आप हीं कथन करते हो ॥ १२ ॥ १३ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे भगवन् आप परब्रह्म रूप हो ॥ अर्थात् तत्त्ववेत्ता पुरुषों कूं प्राप्त होने योग्य जो सर्व उपाधियों तैरहित निर्विशेष ब्रह्म है सो आप हीं हो ॥ ईहां (परम्) इस विशेषण करिके उपासना करने योग्य सो पाधिक अपरब्रह्मकी व्यावृत्ति कथन करी है ॥ काहे तैत्तिरीय (तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदि मुपासते) यह श्रुति उपासना करने योग्य सो पाधिक अपरब्रह्मका निषेध करिके निर्विशेष चैतन्य कूं हीं ब्रह्म कहै है ॥ पुनः कैसे हो आप परं धाम हो ॥ अर्थात् स्थूल तैत्तिरीय आदिके अव्याकृत पर्यंत सर्व प्रपंचका आश्रय रूप हो ॥ अथवा परमप्रकाश रूप हो ॥ ईहां भी (परम्) इस विशेषण करिके वृत्ति रूप अपरप्रकाशकी व्यावृत्ति कथन करी है ॥ काहे तैत्तिरीय (हीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वमन एव) यह श्रुति तिस वृत्ति रूप ज्ञान कूं मन का हीं परिणाम विशेष कथन करे है ॥ पुनः कैसे हो आप परमपवित्र हो ॥ अर्थात् लोकशास्त्रविषे प्रसिद्ध जितने की पावन करने हारे तीर्थादिक हैं ॥ तिन सबों तैत्तिरीय आप परम उत्तम पावन करने हारे हो ॥ काहे तैत्तिरीय श्रद्धा पूर्वक कन्ये हुए ते तीर्थादिक इस पुरुषके केवल पापकर्म कूं हीं नाश करे हैं ॥ तिन पापकर्मोंके

कारणरूपअज्ञानकूं नाशकरतेनहीं ॥ और आपपरब्रह्मतौ इनअधिकारीपुरुषोंकेवृत्तिविषेआरूढहोइके अज्ञानरूपकारणसहित सर्वपापकर्मोंकूंनाशकरोहो ॥ याका
रणतैंहीं (पवित्राणांपवित्रंयोमंगलानांचमंगलम्) इत्यादिकस्मृतिवचन आपकूं पवित्रकरणेहारेतीर्थादिकसर्वपवित्रोंकाभी पवित्रकरणेहारा कथनकरेहैं ॥ तथा सर्व
मंगलोंकाभी मंगलरूप कथनकरेहैं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन ऐसाहमारास्वरूप तुमनै केवल आपणीबुद्धिकरिकै निश्चयक-याहै ॥ अथवा किसीप्रमाणतैं निश्चयक-याहै ॥
ऐसीभगवान्कीशंकाकेहुए ॥ अर्जुन तिसउक्तस्वरूपविषे परमआत्तरूपऋषियोंके तथासाक्षात्श्रीभगवान्के वचनरूपप्रमाणकूंकथनकरेहै (पुरुषंशाश्वतम्) इत्या
दिकसार्द्धश्लोककरिकै ॥ हेभगवन् ज्ञाननिष्ठावाले जेभृगुवसिष्ठादिकसर्वऋषिहैं ॥ तथा देवऋषिजनारदहै ॥ तथा असितऋषिजोहै ॥ तथा देवलऋषिजोहै ॥ तथा
साक्षात्विष्णुकाअवताररूपजोव्यासमुनिहै ॥ यहसर्वऋषिभी हमारेताई इसीप्रकारके तुमारेस्वरूपकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ तेभृगुआदिकसर्वऋषि किसप्रकारकेहमारे
स्वरूपकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुनकहेहै (पुरुषमिति) हेभगवन् तेभृगुआदिकसर्वऋषिभी अनंतमहिमावालेआपपरमेश्वरकूं पुरुषक
हेहैं ॥ अर्थात् (पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः) इसश्रुतिविषे पुरुषशब्दकरिकै कथनक-याजो निर्विशेषपरब्रह्महै तिसपरब्रह्मरूप आपकूं कथनकरेहैं ॥
तथा तेऋषि आपकूं शाश्वत कहेहैं अर्थात् भूत भविष्यत् वर्तमान सर्वकालविषे एकरूप कहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं दिव्य कहेहैं ॥ तहां (परमेव्योमन्सर्वा
भूतानि) इसश्रुतिविषे परमेव्योमशब्दकरिकैकथनक-याजो स्वस्वरूपहै तास्वस्वरूपकानाम दिव्यहै तादिवविषेजोविराजमानहोवै ताकानाम दिव्यहै ॥ ऐसेदिव्यरू
प आपकूं कहेहैं ॥ अर्थात् सर्वप्रपंचतैरहितकहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं आदिदेव कहेहैं ॥ इहां सर्वजगत्केकारणकानाम आदिहै और स्वप्रकाशकानाम
देवहै ॥ जो आदिहोवे तथादेवहोवै ताकानाम आदिदेवहै ॥ अर्थात् तेऋषि आपकूं सर्वजगत्काकारणरूप तथास्वप्रकाशरूप कहेहैं ॥ इहां कारणकीस्वप्रका
शताकहणेतैं नैयायिकोंनैकल्पनाक-येहुए परमाणुरूपकारणकी तथा सांख्यीयोंनैकल्पनाक-येहुए प्रधानरूपकारणकी व्यावृत्तिकरी ॥ तेप्रधानपरमाणुआदिसर्व
जडहोणेतैं परप्रकाशहींहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं अज कहेहैं अर्थात् जन्मतैरहित कहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं विभु कहेहैं ॥ अर्थात् सर्वत्रव्यापककहेहैं ॥
हेभगवन् केवल तेभृगुआदिकऋषिहीं हमारेताई इसप्रकारकेतुमारेस्वरूपकूं नहींकथनकरेहैं ॥ किंतु जिसआपपरमेश्वरकेवेदरूपवचनोंकेअनुसारीहुएहीं तिनभृगुआदि
कऋषियोंकेवचन प्रमाणरूपहोवैहै ॥ ऐसेसाक्षात्आपभगवान्हीं हमारेताई (भोक्तरंयज्ञतपसां सर्वभूतस्थितंयोमाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै इसीप्रकारकेआपके
स्वरूपकूंकथनकरतेभयेहो इति ॥ इहां यद्यपि (आहुस्त्वामृषयःसर्वे) इसवचनविषेस्थितजो सर्व यहशब्दहै ॥ तासर्वशब्दकरिकैहीं तिननारदादिकसर्वऋषि
योंकाग्रहणहोइसकेहै तथापि नारद असित देवल श्रीव्यास इनचारोंकाजो अर्जुननै नामलैके पृथक्ग्रहणक-याहै ॥ सो साक्षात् परमेश्वरकेस्वरूपकेवक्तापणेकरिकै

तिननारदादिकोंकी अत्यंत श्रेष्ठताके बोधन करने वासतै है इति ॥ और (आहुस्त्वामृषयः सर्वे) इस वचन करिके जो अर्जुनने आपणे निश्चय विषे ऋषियोंके वचनोंकी संमति कथन करी है ॥ ताकरिके यह अर्थ सूचन कन्या है ॥ इन अधिकारी पुरुषोंने शास्त्रद्वारा आपणी बुद्धि करिके निश्चय कन्याहुआ भी आत्माका स्वरूप ताके विषे पुनः संशयकी अनुत्पत्ति वासतै ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषोंकी संमति अवश्य करिके ग्रहण करणी इति ॥ १२ ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां गुरुशास्त्र उपदिष्ट अर्थ विषे इस अधिकारी पुरुषने कदाचित् भी संशय नहीं करणा ॥ किंतु सो गुरुशास्त्रने उपदेश कन्याहुआ सर्व अर्थ सत्य है या प्रकारकी सत्यत्व बुद्धि ही करणी ॥ इस अर्थकू सूचन कर ताहुआ सो अर्जुन तिन वचनों विषे आपणे सत्यत्व बुद्धिकू कथन करे है ॥

(मू० श्लो०) सर्वमेतद्वत्तमन्येयन्मां वदसि केशव ॥ न हिते भगवन् व्यक्तिं विदुर्देवानदानवाः ॥ १४ ॥ सर्वम् । एतत् । ऋतम् । मन्ये । यत् । माम् । वदसि । केशव । न । हिं । ते । भगवन् । व्यक्तिं । विदुः । देवाः । न । दानवाः ॥ १४ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे केशव मैं अर्जुन के प्रति जो वचन आप कथन करते हो यह सर्व वचन मैं सत्य मानता हूं जिस कारणते हे भगवन् तुमारे प्रभावकू देवता भी नहीं जानते हैं तथा दानव भी नहीं जानते हैं ॥ १४ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे केशव मैं अर्जुन के प्रति जो पूर्व आपने आपका स्वरूप कथन कन्या ॥ तथा भृगु आदिक सर्व ऋषियोंने जो आपका स्वरूप कथन कन्या है ॥ तिन सर्व वचनोंकू मैं अर्जुन सत्य ही मानता हूं ॥ हे भगवन् तुमारे वचनों विषे हमारेकू किंचित् मात्र भी अप्रमाण पणे की शंका नहीं है ॥ इस हमारे हृदय की वार्ताकू सर्वज्ञ होनेते आप जानते ही हो ॥ यह अर्थ अर्जुनने केशव इस संबोधन करिके सूचन कन्या ॥ तहां (केशौ वाति अनुकंप्य तया अवगच्छतीति केशवः) ॥ अर्थ यह ॥ क नाम ब्रह्माका है और ईश नाम रुद्रका है तिन दोनोंकू अनुग्रह करिके जो प्राप्त होवै ताका नाम केशव है ॥ इस प्रकारकी व्युत्पत्तिकू अंगीकार करिके सो केशव शब्द निरति शय ऐश्वर्यका ही प्रतिपादक है ॥ ऐसे केशव नाम वाले आप परमेश्वर हमारे हृदय के वृत्तांतकू जानते ही हो इति ॥ याते हे भगवन् जो पूर्व आपने (न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः) इत्यादिक वचन कथन कन्ये थे ॥ ते सर्व आपके वचन यथार्थ ही है ॥ हे भगवन् अर्थात् हे समग्र ऐश्वर्यादिक षट्भग संपन्न ॥ तुमारे प्रभावकू बहुत बुद्धिमान् इंद्रादिक देवता भी जानि सकते नहीं ॥ तथा तुमारे प्रभावकू मधु आदिक दानव भी जानि सकते नहीं ॥ तथा तुमारे प्रभावकू भृगु आदिक महान् ऋषि भी जानि सकते नहीं ॥ जबी तिस तुमारे प्रभावकू सर्वज्ञ इंद्रादिक देवता तथा मधु आदिक दानव तथा भृगु आदिक महान् ऋषि भी नहीं जानि सकते ॥ तबी इदानीं कालके अल्पज्ञ मनुष्य तिस आपके प्रभावकू नहीं जाने हैं याके विषे क्या कहना है इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ हे भगवन् जिस कारणते आप परमेश्वर तिन देवता

ऋषिआदिकसर्वोंकाआदिकारणहो ॥ तथा तिनदेवतावोंकरिकैभी जानणेकूंअशक्यहो ॥ तिसकारणतैं तुमआपहीं आपकेप्रभावकूं यथावत्जानतेहो ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुन कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) स्वयमेवात्मनात्मानंवेत्थत्वंपुरुषोत्तम ॥ भूतभावनभूतेशदेवदेवजगत्पते ॥ १५ ॥ स्वयम् । एव । आत्मना । आत्मा नम् । वेत्थम् । त्वम् । पुरुषोत्तम । भूतभावनम् । भूतेश । देवदेव । जगत्पते ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपुरुषोत्तम हेभूतभावन हेभूतेश हेदेवदेव हेजगत्पति श्रीभगवान् अन्यकेउपदेशतैंविनाहीं तूं आपणेस्वरूपकरिकै आपणेआत्माकूं जानताहैं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥ टीका ॥ हेभगवन् अन्यकिसीकेउपदेशतैंविनाहीं तूं आपहीं आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिकै आपणेनिरुपाधिकस्वरूपकूं तथासोपाधिकस्वरूपकूं जानताहैं ॥ तहां आपणेनिरुपाधिकशुद्धस्वरूपकूंताँ प्रत्यक्स्वरूपकरिकै तथाअविषयतारूपकरिकै जानताहै ॥ और आपणेसोपाधिकस्वरूपकूंताँ निरतिशयज्ञानऐश्वर्यादिकशक्तिमत्स्वरूपकरिकै जानताहैं ॥ अन्यकोई देवता वाऋषि वादानव मनुष्य तिसतुमारेस्वरूपकूं जानतानहीं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन अन्यदेवतादिकोंकरिकै जानणेकूं अशक्यस्वरूपकूं मैंपरमेश्वरभी कैसेजानूंगा ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकूं निवृत्तकरताहुआ अर्जुन अत्यंतप्रेमकीउत्कंठाकरिकै श्रीभगवान्के बहुतसंबोधनोंकूं कथनकरेहै (हेपुरुषोत्तम) अर्थात् हेसर्वपुरुषोंविशेषेष्ट ॥ तात्पर्ययह ॥ तुमारीअपेक्षाकरिकै दूसरेसर्वपुरुष अपकृष्टहींहैं ॥ यातैं तिनदूसरेपुरुषोंकूं जोअर्थजानणेकूं अशक्यहै ॥ सोअर्थ सर्वतैंउत्तम तैंपरमेश्वरकूं जानणेकूंशक्यहींहैं इति ॥ अब परमेश्वरविषेकथनकन्याजोपुरुषोत्तमपणाहै तिसपुरुषोत्तमपणेकूं पुनःच्यारिसंबोधन करिकै प्रतिपादनकरेहैं (हेभूतभावनइति) तहां सर्वभूतोंकूं जो उत्पन्नकरेहै ताकानाम भूतभावनहै ॥ अर्थात् हेसर्वभूतोंकेपिता ॥ तहां इसलोकविषे कोईक पुरुष पिताहुआभी पुत्रादिकोंकानियंताहोतानहीं ॥ तैसेपरमेश्वरभी तिनसर्वभूतोंकापिताहुआभी तिनसर्वभूतोंका नियंतानहींहोवैगा ॥ किंतु तापरमेश्वरतों भिन्नहीं कोई तिनभूतोंकानियंताहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणेवास्तै अर्जुन तापरमेश्वरका अन्यसंबोधन कहेहै (हेभूतेशइति) अर्थात् हेसर्वभूतोंके नियंता ॥ तहां इसलोकविषे कोईकराजादिकपुरुष आपणीप्रजादिकोंकेनियंताहुएभी तिनप्रजादिकोंकरिकै आराधन करणेयोग्यहोतेनहीं ॥ तैसे सोपरमेश्वरभी तिनसर्व भूतोंका नियंताहुआभी तिनसर्वभूतोंकरिकै आराधनकरणेयोग्यनहीं होवैगा ॥ किंतु तापरमेश्वरतैं भिन्नहींकोई आराधनकरणेयोग्यहोवैगा ॥ ऐसीशंकाके निवृत्तकरणे वास्तै अर्जुन तापरमेश्वरका अन्यसंबोधनकरेहै (हेदेवदेवइति) तहां सर्वप्राणीयोंकरिकै आराधन करणेयोग्य जेइंद्रादिकदेवताहैं तिनइंद्रादिकदेवतावोंकरिकैभी जोआराधनकन्याजावैहै ताकानाम देवदेवहै ॥ अर्थात् हेदेवतावोंतैं आदिलेकेसर्वप्राणीयोंकरिकै आराधन करणेयोग्य ॥ तहां इसलोकविषे कोईक पुरुष

आराधनकरणयोग्यहुआ भी पालनकर्तारूपकरिके पतिहोतानहीं ॥ तैसे सोपरमेश्वरभी आराधनकरणयोग्यहुआभी पालनकर्तारूपकरिके पतिनहीं होवेंगा ॥ किंतु तिसपरमेश्वरतैभिन्नहींकोई इसजगत्कापतिहोवेंगा ॥ ऐसीशंकाके निवृत्तकरणेवास्तै अर्जुन तिसपरमेश्वरका अन्यसंबोधन कहेहै (हेजगत्पतेइति) अर्थात् अधिकारीजनोंकेप्रति हितकाउपदेशकरिके शुभकर्मोंविषे प्रवृत्तकरणेहारा तथाअहितकाउपदेशकरिके अशुभकर्मोंतैनिवृत्तकरणेहारा ऐसाजोदेवहै तादेवकूं सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नकरिके आपहीं इससर्वजगत्कूंपालनकरतेहो ॥ यातैयहअर्थसिद्धभया ॥ इसप्रकारकेसर्वविशेषणोंकरिके विशिष्ट आपपरमेश्वरहीं सर्वप्राणीयोंकेपिताहो ॥ तथासर्वप्राणीयोंकेगुरुहो तथासर्वप्राणीयोंकेराजाहो ॥ इसकारणतैहीं आपसर्वप्रकारकरिके सर्व प्राणीयोंकूंआराधनकरणयोग्यहो ॥ ऐसेमहान्प्रभाववालेआपविषे पुरुषोत्तम पणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ १५ ॥ * ॥ हेभगवन् जिसकारणतै आपपरमेश्वरकी विभूतियोंकूं अन्यकोई भी देवता वाऋषि वादानव वामनुष्यजानिसकतानहीं ॥ और तेआपकी विभूतियां हमारेकूं अवश्यकरिके जानीयांचाहिये ॥ तिसकारणतै तेआपकीविभूतियां आपहीं हमारेप्रति विस्तारतैकथनकरो इसप्रकारकीप्रार्थना अर्जुनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) वक्तुमर्हस्यशेषेणदिव्याह्यात्मविभूतयः । याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वंव्याप्यतिष्ठसि ॥ १६ ॥ वक्तुमाहं हसिअंशेषेण । दिव्याः । हिं । आत्मविभूतयः । याभिः । विभूतिभिः । लोकांन् । इमान् । त्वम् । व्याप्य । तिष्ठसि ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् जिन विभूतियोंकरिके ईन सर्वलोकोंकूं व्याप्यकरिके तुम स्थितहो तेविभूतियां जिसकारणतैदिव्यहैं तिसकारणतै आपहीं तैसंमग्र आपणीविभूतियां कहनेकूं योग्यहो ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जिन आपणीविभूतियोंकरिके आप इसमनुष्यलोकतै आदिलैकेब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंकूंव्याप्तकरिके स्थितहो ॥ तेआपकी असाधारण विभूतियां जिसकारणतै दिव्यहैं ॥ अर्थात् अस्मदादिकअसर्वज्ञपुरुषोंने आपहीं जाननेकूंअशक्यहैं ॥ तथा अवश्यकरिके जानीयांचहीये ॥ तिसकारणतै आप सर्वज्ञहीं तेआपणीसमग्रविभूतियां कहनेकूंयोग्यहो इति ॥ १६ ॥ * ॥ शंका ॥ हेअर्जुन लोकविषे प्रयोजनतैविना किसीभीचेतन प्राणीकी प्रवृत्तिहोतीन हीं ॥ किंतु किसीप्रयोजनकाउपदेशकरिकेहीं सर्वप्राणीयोंकी प्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातै तिनविभूतियोंकेजाननेकरिके तुमारा जोप्रयोजन सिद्धहोताहोवै ॥ सोआपणा प्रयोजन तूं प्रथम हमारेप्रति कथनकर ॥ पश्चात् मैं तुमारेताई तैआपणीविभूतियां कथनकरौंगा ॥ ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहुए ॥ अर्जुन दोश्लोकोंकरिके ताआपणेप्रयोजनकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) कथंविद्यामहंयोगिंस्त्वांसदापरिचिंतयन् ॥ केषुकेषुचभावेषुचित्योसिभगवन्मया ॥ १७ ॥ कथम् । विद्याम् । अहं । योगिन् । त्वाम् । सदा । परिचिंतयन् । केषुं । केषुं । च । भावेषु । चित्यः । असि । भगवन् । मया ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेयोगिन् मैंस्थूलबुद्धिवालाअर्जुन सर्वदा तुमाराध्यानकरताहुआ तुमारेकूँ किसप्रकारतैं जानउ हेभगवन् किनं किनं वस्तुवोंविषे मैंअर्जुनतैं तूँपरमेश्वर चिंतनकरणेयोग्यहैं ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेयोगिन् ईहां निरतिशयऐश्वर्यादिकशक्तिकानाम योगहै ॥ सोयोग जिसविषेविद्यमानहोवै ताकानाम योगिन्है ॥ अर्थात् हेनिरतिशयऐश्वर्यादिक शक्तिवाला कृष्णभगवान् ॥ अत्यंतस्थूलबुद्धिवाला मैंअर्जुन सर्वकालविषे तुमाराध्यानकरताहुआ देवादिकोंकरिकैभी जानणेकूँ अशक्य तैंपरमेश्वरकूँ किसप्रकारतैं जानउ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन हमारीविभूतियोंविषे मैंपरमेश्वरकूँ ध्यानकरताहुआ तूं मैंपरमेश्वरकूँ जानैगा ॥ यहहीं हमारेजानणेकाप्रकारहै ॥ ऐसीश्रीभगवान्की शंकाकेहुए ॥ जिनविभूतियोंविषेस्थितआपका ध्यानकरताहुआ मैं आपकूँजानूंगा ॥ तिनविभूतियोंकूँहीं मैं प्रथम जानतानहीं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूँ अर्जुन कथनकरेहै (केषुकेषुचभावेषुइति) हेभगवन् तुमारीविभूतिरूप किनकिन चेतनअचेतनरूपवस्तुवोंविषे मैं अर्जुन करिकै आप चिंतनकरणेयोग्यहो ॥ अर्थात् किनकिनविभूतियोंविषे मैंअर्जुन आपकाचिंतनकरूं इति ॥ १७ ॥ * ॥ हेभगवन् जिनजिनविभूतियोंविषे आपचिंतनकरणेयोग्यहो ॥ तिनविभूतियोंकूँ मैं अर्जुन जानतानहीं ॥ इसकारणतैं आपहीं कृपाकरिकै तिनआपणेविभूतियोंकूँ कथनकरो ॥ इसप्रकारकीप्रार्थना अर्जुन करेहै ॥

(मू० श्लो०) विस्तरेणात्मनोयोगंविभूतिंचजनार्दन ॥ भूयःकथयतृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेऽमृतम् ॥ १८ ॥ विस्तरेण । आत्मनः । योगं । विभूतिं । च । जनार्दन । भूयः । कथय । तृप्तिः । हिं । शृण्वतः । न । अस्ति । मे ॥ अमृतम् ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेजनार्दन आप आपणे योगकूँ तर्था विभूतिकूँ पुनः विस्तारकरिकै कथनकरौ जिसकारणतैं तुमारेवचनरूप अमृतकूँ श्रवणकरिकै पानकरतेहुए मैंअर्जुनकी तृप्ति नहो होवैहै ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेजनार्दन सर्वज्ञपणा तथासर्वशक्तिसंपन्नपणा इत्यादिकऐश्वर्यतारूपजोयोगहै ॥ तथा अधिकारीजनोके ध्यानकाआलंबनरूपजाविभूतिहै ॥ ऐसे आपणेयोगकूँ तथाविभूतिकूँ आप पुनः विस्तारकरिकै कथनकरौ ॥ यद्यपि तिसआपणेयोगकूँ तथाविभूतिकूँ आप पूर्व सप्तमअध्यायविषे तथानवमअध्याय विषे संक्षेपतैंकथनकरिआयेहो ॥ तथापि अभी तिसयोगकूँ तथाविभूतिकूँ विस्तारकरिकैकथनकरो ॥ यहअर्थ अर्जुनतैं (भूयः) इसशब्दकेकहणेकरिकैसूचन

कन्या ॥ और (हे जनार्दन) इस संबोधन के कहने करिके अर्जुन नै श्री भगवान् के प्रति यह अर्थ सूचन कन्या ॥ सर्वजनों नै स्वर्गादिक सुखों की प्राप्ति वासतै तथा मोक्ष की प्राप्ति वासतै जिसके प्रति याचना करीती है ताका नाम जनार्दन है ॥ ऐसे आप जनार्दन के आगे यह हमारी याचना भी उचित है इति ॥ शंका ॥ हे अर्जुन पूर्व कथन कन्ये हुए अर्थ के पुनः कथन करने की याचना तू किस वासतै करता है ॥ पूर्व कथन कन्ये हुए अर्थ का पुनः कथन करना पीस्ये हुए अन्न कूं पुनः पीसने की न्यांई संभवता नहीं ऐसी श्री भगवान् की शंका के हुए ॥ अर्जुन ता पुनः कथन करने की याचना विषे कारण कूं कहै (तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतमिति) हे भगवन् जिस कारण तैं अमृत की न्यांई पद पद विषे स्वादु स्वादु ऐसे जे आपके वचन है ऐसे आपके अमृत मय वचनों कूं श्रवण इंद्रिय रूप मुख करिके पान करते हुए मैं अर्जुन की तृप्ति होती नहीं ॥ अर्थात् इन वचनों कूं श्रवण करिके अबी मैं तृप्त हुआ हूं या प्रकाश की अलंबुद्धि करिके तिन वचनों के श्रवण विषयक हमारी इच्छा निवृत्त होती नहीं ॥ तिस कारण तैं तिस आपणें योग कूं तथा विभूति कूं पुनः हमारे प्रति विस्तार तैं कथन करौ इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अब इस पूर्व उक्त अर्जुन के प्रश्न का उत्तर श्री भगवान् कथन करे है ॥

(मू० श्लो०) श्री भगवानुवाच ॥ हंत ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ॥ प्राधान्यतः कुरु श्रेष्ठ नास्त्यंतो विस्तरस्य मे ॥ १९ ॥

हंत । ते । कथयिष्यामि । दिव्याः । हिं । आत्मविभूतयः । प्राधान्यतः । कुरु श्रेष्ठ । न । अस्ति । अंतः । विस्तरस्य । मे ।

॥ १९ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे कुरुवंश विषे श्रेष्ठ अर्जुन मैं अबी तुमारे तांई प्रसिद्ध तथा दिव्य आपणी विभूतियां प्रधानता करिके कथन करता हूं जिस कारण तैं मैं परमेश्वर की विभूतियों के विस्तार का कोई पार नहीं है ॥ १९ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (हंत) यह शब्द इदानीं काल का वाचक है ॥ अर्थात् अबीहीं ते विभूतियां मैं तुमारे तांई कहता हूं ॥ अथवा हंत यह शब्द अनुमति का वाचक है ॥ अर्थात् मैं परमेश्वर के आगे तुम नैं जिस अर्थ के जानने की प्रार्थना करी है ॥ सो अर्थ अवश्य करिके तुमारे तांई कथन करूंगा ॥ तूं व्याकुल मत होउ ॥ इस प्रकार अर्जुन कूं धैर्य दे करिके श्री भगवान् तिस अर्थ के कथन करने का प्रारंभ करे है ॥ हे अर्जुन मैं परमेश्वर की जे असाधारण विभूतियां दिव्य रूप करिके प्रसिद्ध हैं ॥ ते आपणी विभूतियां मैं परमेश्वर तैं अर्जुन के तांई प्रधानता करिके कथन करता हूं ॥ अर्थात् आपणी प्रधान प्रधान विभूतियों कूं मैं कथन करता हूं ॥ शंका ॥ हे भगवन् जितनी आपकी प्रधान रूप तथा अप्रधान रूप विभूतियां हैं ॥ ते सर्व ही विभूतियां आप हमारे तांई कथन करो ॥ केवल प्रधान प्रधान विभूतियों कूं किस वासतै कथन करते हो ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए श्री भगवान् तिन आपणें विभूतियों की अनंतता कूं कथन करे है (नास्त्यंतो विस्तरस्य मे इति) हे अर्जुन मैं परमेश्वर की जितनी की प्रधान रूप तथा अप्रधान रूप सर्व विभूतियां हैं ॥ ते सर्व विभूतियां कथन करने कूं अशक्य हैं ॥ जिस कारण तैं मैं परमेश्वर के तिन विभूतियों के विस्तार का कोई अंत नहीं है ॥ अर्थात् सर्व विभूतियां इतनी हैं या प्रकाश की

इयत्तासंख्यातैरहितहैं ॥ तिसकारणतैं प्रधानप्रधानभूत कोईकविभूतियांहीं मैतुमारेताई कथनकरताहूं इति ॥ १९ ॥ * ॥ तहां तिनप्रधानप्रधानविभूतियों विषेभी जोप्रथम मुख्यवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर ॥

(मू० श्लो०) अहमात्मागुडाकेशसर्वभूताशयस्थितः ॥ अहमादिश्चमध्यंचभूतानामंतएवच ॥ २० ॥ अहम् । आत्मा । गुडाकेश । सर्वभूताशयस्थितः । अहम् । आदिः । च । मध्यं । च । भूतानाम् । अंतः । एव । च ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेगुडाकेशअर्जुन सर्वभूतोंकेहृदयदेशविषेस्थित चैतन्यआनंदघन मैहींहूं तथा मैपरमेश्वरहीं सर्वभूतोंका उत्पत्तिहूं तथा स्थितिहूं तथा विनाशहूं ॥ २० ॥ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेगुडाकेशअर्जुन सर्वप्राणीयोंकेहृदयदेशविषे अंतर्यामिरूपकरिके तथाप्रत्यक्आत्मारूपकरिके स्थितजोचैतन्यस्वरूप आनंदघन परमात्मादेवहै ॥ सो परमात्मावासुदेव मैहींहूं ॥ इसप्रकारतैं अभेदरूपकरिके तुमनै मैपरमेश्वरकाध्यानकरणा ॥ ईहां (हेगुडाकेश) इससंबोधनकरिके श्रीभगवान् नै यहअर्थसूचनकन्या ॥ गुडाकानाम निद्राकाहै ॥ तानिद्राकूं जोआपणेवशकरेहै ताकानाम गुडाकेशहै ॥ ऐसा निद्रादिकविकारोंकूं आपणेवशकरणेहारा तूंअर्जुन अभेदरूपकरिके मैपरमेश्वर केध्यानकरणेविषेसमर्थहैं इति ॥ इतनैकरिके उत्तमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार कथनकन्या ॥ अब मध्यमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार निरूपणैकरह (अहमादिःइति) हेअर्जुन इसप्रकारतैं अभेदरूपकरिके मैपरमेश्वरकेध्यानकरणेविषे जोतूं समर्थनहींहोवैं ॥ तौ आगेकथनकरणेयोग्यध्यान तुमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ तिनवक्ष्यमाणध्यानोंविषेभी प्रथम जोवस्तु ध्यानकरणेयोग्यहै तिसकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (अहमादिःइति) हेअर्जुन लोकविषे चेतनरूपकरिकेप्रसिद्ध जितनै कीप्राणीहै ॥ तिनसर्वप्राणीयोंका मै परमेश्वरहीं उत्पत्तिहूं ॥ तथा मैपरमेश्वरहीं तिनसर्वप्राणीयोंकी स्थितिहूं ॥ तथा मैपरमेश्वरहीं तिनसर्वप्राणीयोंकाविनाशहूं ॥ अर्थात् तिनसर्वप्राणीयोंकी उत्पत्तिस्थितिनाशरूपकरिके तथातिनसर्वप्राणीयोंका कारणरूपकरिके मैपरमेश्वरहीं तुमारेकूं ध्यानकरणेयोग्यहूं ॥ इतनैकरिके मध्यमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार कथनकन्या इति ॥ २० ॥ * ॥ हेअर्जुन इसप्रकारकेध्यानकरणेविषेभी जोतूं समर्थनहींहोवैं ॥ तौ आगेकथनकरणेयोग्य बाह्यध्यानहीं तुमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायकरिके श्रीभगवान् मंदअधिकारी पुरुषोंऊपर अनुग्रहकरिके तिनबाह्यध्यानोंकूं इसदशम अध्यायकीसमाप्तिपर्यंत विस्तारतैं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) आदित्यानामहंविष्णुज्योतिषारविरेणुमान् ॥ मरीचिर्मरुतामस्मिनक्षत्राणामहंशशी ॥ २१ ॥ आदित्यानाम् । अहं ।

विष्णुः । ज्योतिषां । रविः । अंशुमान् । मरीचिः । मरुताम् । अस्मि । नक्षत्राणाम् । अहं । शशी ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअ
 र्जुन आदित्योकेमध्यमै विष्णुनामाआदित्य मैपरमेश्वर हूं तथा प्रकाशकोकेमध्यमै व्यापकप्रकाशवाला रवि मैहूं तथा मरुद्गणोंके
 मध्यमै मरीचिनामामरुत् मैहूं तथा नक्षत्रोंकेमध्यमै चंद्रमा मैहूं ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्वादशआदित्योंकेमध्यमै विष्णुनामाआदित्य मैहूं ॥ अथवा विष्णुकहीये वामनअवतार मैहूं ॥ तथा अश्विनैआदिलैके जितनैकीप्रकाशकरणेहारेहैं
 तिनसर्वप्रकाशकोकेमध्यविषे सर्वविश्वविषे व्यापकहैप्रकाशजिसका ऐसाजोसूर्यहै सोमैहूं ॥ तथा मरुत्नामाजेओगणपंचास देवताविशेषहैं तिनमरुतोंकेमध्यमै
 मरीचिनामामरुत् मैहूं ॥ तथा अश्विनीतैआदिलैकेजितनैकी आकाशविषेस्थित तारागणरूपनक्षत्रहैं तिनसर्वनक्षत्रोंकेमध्यविषे तिनसर्वनक्षत्रोंकाअधिपतिचंद्रमा
 मैहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ तेद्वादशसूर्य तथाअग्निआदि सर्वज्योति तथा ओगणपंचासमरुद्गण तथा अश्विनीआदिकसर्वनक्षत्र यहसर्वहीं यद्यपि सामान्यरूपतै मैपरमेश्व
 रकीहीं विभूतिहैं ॥ तथापि तिनोकेमध्यविषे विष्णुनामाआदित्य तथारविनामाज्योति तथामरीचिनामामरुत् तथाचंद्रमानामानक्षत्र यहसर्वप्रभावकीअधिकताक
 रिकै हमारी विशेषविभूतिहैं ॥ यातै तिनद्वादशआदित्योंविषे विष्णुनामाआदित्य परमेश्वरहीहैं याप्रकार मैपरमेश्वरकीबुद्धिकरिकै सोविष्णुनामाआदित्य इनअधिका
 रीपुरुषोंने ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारतैहीं रविमरीचि चंद्रमा यहतीनों मैपरमेश्वररूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहैं ॥ यहध्यानकीरीतिइसदशमअध्यायकीसमाप्ति
 पर्यंत सर्वपर्यायोंविषे जानिलेणी इति ॥ ईहां यद्यपि वामन राम इत्यादिक साक्षात् परमेश्वरकेअवतारहीहैं ॥ तथा सर्वऐश्वर्यतावालेहैं ॥ आदित्यादि
 कोकीन्याई परमेश्वरकीविभूतिरूपनहींहैं ॥ तथापि जैसे (वृष्णीनांवासुदेवोस्मि) इसवक्ष्यमाणवचनविषे श्रीभगवाननै तिसवासुदेवरूपतै परमेश्वरकेध्यानकरावणे
 वासतै आपणाभी तिनविभूतियोंविषेहीं पठनकन्याहैं ॥ तैसे वामनरामादिकोंकाभी तिसतिसरूपतै परमेश्वरकेध्यानकरावणेवासतै श्रीभगवाननै आपणीविभूति
 योंविषेहीं पठनकन्याहै ॥ इति ॥ २१ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) वेदानांसामवेदोस्मिदेवानामस्मिवासवः ॥ इंद्रियाणांमनश्चास्मिभूतानामस्मिचेतना ॥ २२ ॥ वेदानाम् । सामं
 वेदः । अस्मि । देवानाम् । अस्मि । वासवः । इंद्रियाणाम् । मनः । च । अस्मि । भूतानाम् । अस्मि । चेतनां ॥ २२ ॥ (इतिप०) ॥
 हेअर्जुन वेदोंकेमध्यमै सामवेद मैहूं तथा देवताओंकेमध्यमै इंद्र मैहूं तथा इंद्रियोंकेमध्यमै मन मैहूं तथा भूतोंकेमध्यमै
 चेतना मैहूं ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इन च्यारि वेदों के मध्य विषे गायन की मधुरता करिके अत्यंतर मणीक जो साम वेद है सो साम वेद मैं हूँ ॥ तथा अग्नि वायु आदिसर्व देवताओं के मध्य विषे तिन सर्व देवताओं का अधिपति जो इंद्र है सो इंद्र मैं हूँ तथा चक्षु श्रोत्र त्वक् रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन इन एकादश इंद्रियों के मध्य विषे सर्व इंद्रियों का प्रवर्तक जो मन है ॥ सो मन मैं हूँ ॥ तथा सर्व प्राणियों के संबंधी जित नैकी परिणाम हैं तिनों का नाम भूत है ॥ ऐसे परिणाम रूप भूतों के मध्य विषे चैतन्य की अभिव्यक्तिकरणे हारी जा बुद्धि की वृत्ति रूप चेतना है सा चेतना मैं हूँ इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ॥ वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥ २३ ॥ रुद्राणां । शंकरः । च । अस्मि । वित्तेशः । यक्षरक्षसां । वसूनां । पावकः । च । अस्मि । मेरुः । शिखरिणाम् । अहम् ॥ २३ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन रुद्रों के मध्य मैं शंकर मैं हूँ तथा यक्षराक्षसों के मध्य मैं कुबेर मैं हूँ तथा वसुओं के मध्य मैं अग्नि मैं हूँ तथा रत्नों वाले पर्वतों के मध्य मैं सुमेरु मैं हूँ ॥ २३ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन एकादश रुद्रों के मध्य विषे आपणे भक्तजनों के ताई निरतिशय मोक्ष रूप आनंद की प्राप्तिकरणे हारा जो शंकर नामा रुद्र है सो शंकर मैं हूँ ॥ तथा यक्षों के तथा राक्षसों के मध्य विषे संपूर्ण धन का अधिपति जो कुबेर है सो कुबेर मैं हूँ ॥ तथा अष्ट वसुओं के मध्य विषे अत्यंत श्रेष्ठ जो अग्नि है सो अग्नि मैं हूँ ॥ तथा नाना प्रकार के रत्न रूप शिखरों वाले जित नैकी पर्वत हैं तिन सर्व शिखरीयों के मध्य विषे सुवर्ण मय अत्यंतर मणीय जो सुमेरु है सो सुमेरु मैं हूँ इति ॥ २३ ॥ ❀ किंच ॥

(मू० श्लो०) पुरोधसांच मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ॥ सेनानीनामहं स्कंदः सरसामस्मि सागरः ॥ २४ ॥ पुरोधसां । च । मुख्यं । मां । विद्धि । पार्थ । बृहस्पतिम् । सेनानीनाम् । अहं । स्कंदः । सरसाम् । अस्मि । सागरः ॥ २४ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन सर्व पुरोहितों के मध्य मैं तू मैं परमेश्वर कूं सर्वतः श्रेष्ठ बृहस्पति रूप जान तथा सेना पतियों के मध्य मैं स्कंद मैं हूँ तथा जलाशयों के मध्य मैं सागर मैं हूँ ॥ २४ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ सर्व राजाओं विषे त्रिलोकी कापति देवराज इंद्र श्रेष्ठ है ॥ ऐसे देवराज इंद्र का भी पुरोहित जो बृहस्पति है सो बृहस्पति सर्व राजाओं के पुरोहितों तै श्रेष्ठ हैं ॥ या तै तिन सर्व पुरोहितों के मध्य विषे मैं परमेश्वर कूं तू बृहस्पति रूप जान ॥ तथा सर्व सेनापतियों के मध्य विषे देवताओं का सेनापति जो स्कंद है सो स्कंद मैं हूँ ॥ तथा देवताओं ने खोद्ये हुए जित नैकी जल के रहने के स्थान हैं तिन जलाशय रूप सरोवरों के मध्य विषे सागर के पुत्रों ने खोद्या हुआ जो सागर है सो सागर मैं हूँ इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) महर्षीणां भृगुरहंगिरामस्म्येकमक्षरम् ॥ यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥ २५ ॥ महर्षीणां । भृगुः । अहं । गिराम् । अस्मि । एकम् । अक्षरं । यज्ञानां । जपयज्ञः । अस्मि । स्थावराणाम् । हिमालयः ॥ २५ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन महाऋषियोंके मध्यमें भृगूनामाऋषि मैं हूँ तथा सर्वगिरावोंके मध्यमें ओंकाररूप एक अक्षर मैं हूँ तथा सर्वयज्ञोंके मध्यमें जपरूप यज्ञ मैं हूँ तथा सर्वस्थावरोंके मध्यमें हिमालयपर्वत मैं हूँ ॥ २५ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन ब्रह्माके पुत्ररूप जितनैकी महाऋषि है ॥ तिनसर्व महाऋषियोंके मध्यविषे अत्यंत तेजस्वी जो भृगुऋषि है सो भृगुऋषि मैं हूँ ॥ तथा अर्थके वाचक पदरूप जितनीकी गिरा है तिनसर्व गिरावोंके मध्यविषे ब्रह्मका वाचक जो एक अक्षररूप ओंकारपद है सो ओंकार मैं हूँ ॥ तथा अश्वमेध ज्योतिष्टोम इसतै आदिलेके जितनै वेदविषे यज्ञकथनकन्ये हैं ॥ तिनसर्व यज्ञोंके मध्यविषे हिंसादिक सर्वदोषोंतै रहित होणेतै अत्यंत शुद्धिकरणे हारा जो जपरूप यज्ञ है ॥ सो जपरूप यज्ञ मैं हूँ ॥ तथा इसलोकविषे चलायमानतातै रहित जितनै की स्थितिवाले स्थावरपदार्थ हैं ॥ तिनसर्व स्थावरपदार्थोंके मध्यविषे हिमालयपर्वत मैं हूँ इति ॥ २५ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ॥ गंधर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥ २६ ॥ अश्वत्थः । सर्ववृक्षाणां । देवर्षीणां । च । नारदः । गंधर्वाणां । चित्ररथः । सिद्धानां । कपिलः । मुनिः ॥ २६ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन सर्ववृक्षोंके मध्यमें पिप्पलवृक्ष मैं हूँ तथा सर्वदेवऋषियोंके मध्यमें नारद मैं हूँ तथा सर्वगंधर्वोंके मध्यमें चित्ररथ नामा गंधर्व मैं हूँ तथा सर्वसिद्धोंके मध्यमें कपिल मुनि मैं हूँ ॥ २६ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन वनस्पतिरूप जितनैकी वृक्ष है तिनसर्व वृक्षोंके मध्यविषे पिप्पलनामा वृक्ष मैं हूँ ॥ तथा जे देवताहु एहीं वेदमंत्रोंके दर्शन करिकै ऋषिभाव कूंप्राप्त हु एहें तिनोंका नाम देवऋषि है ॥ ऐसे देवऋषियोंके मध्यविषे नारदनामा देवऋषि मैं हूँ ॥ तथा गायनकरणे हारे जितनैकी गंधर्व हैं तिनसर्व गंधर्वोंके मध्यविषे चित्ररथ नामा गंधर्व मैं हूँ ॥ तथा जे पुरुष विनाहीं प्रयत्नतै जन्ममात्र करिकै हीं धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यता इत्यादिक गुणों कूंप्राप्त हु एहोवै तथानिश्चयकन्या है परमार्थ वस्तुजिनो नै तिनपुरुषोंका नाम सिद्ध है ऐसे सिद्धोंके मध्यविषे कपिलमुनिनामा सिद्ध मैं हूँ इति ॥ २६ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) उच्चैः श्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ॥ ऐरावतं गजेंद्राणां नराणां च नराधिपम् ॥ २७ ॥ उच्चैः श्रवसम् । अश्वानां । विद्धि । माम् । अमृतोद्भवम् । ऐरावतम् । गजेंद्राणाम् । नराणाम् । च । नराधिपम् ॥ २७ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन

सर्वअश्वोंकेमध्यमें अमृतकेमथनकरणेकालविषेउद्धवहुआ उच्चैःश्रवसनामाअश्व मेरेकूं तूजान तथासर्वगजोंकेमध्यमें ऐरावतनामा
गज मेरेकूंजान तथा सर्वनरोंकेमध्यमें राजारूप मेरेकूंजान ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वअश्वोंकेमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठ जोउच्चैःश्रवसनामाअश्वहै ॥ जोउच्चैःश्रवसनामाअश्व अमृतकीप्राप्तिवासतै देवतावोंनें तथादैत्योंनें मथन
कीयेहुएसमुद्रतैं प्रगटहोताभयाहै ऐसाउच्चैःश्रवसनामाअश्व मेरेकूं तूजान ॥ तथा सर्वगजोंकेमध्यविषे ऐरावतनामागज मेरेकूंतूजान ॥ जोऐरावतनामागज अमृत
कीप्राप्तिवासतै देवतादैत्योंनें मथनकयेहुएसमुद्रतैं प्रगटहोताभयाहै ॥ तथा सर्वनरोंकेमध्यविषे सर्वप्रजाकूं धर्मविषेप्रवृत्तकरणेहारा तथाअधर्मतैंनिवृत्तकरणेहारा
जोराजाहै सोराजा मेरेकूंतूजान इति ॥ २७ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) आयुधानामहंव्रंधेनूनामस्मिकामधुक् ॥ प्रजनश्चास्मिकंदर्पःसर्पाणामस्मिवासुकिः ॥ २८ ॥ आयुधानाम् । अहम् ।
व्रजम् । धेनूनाम् । अस्मि । कामधुक् । प्रजनः । च । अस्मि । कंदर्पः । सर्पाणाम् । अस्मि । वासुकिः ॥ २८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन सर्वआयुधोंकेमध्यमें व्रज में हूं तथा सर्वधेनुओंकेमध्यमें कामधेनु मेंहूं तथा सर्वकामोंकेमध्यमें पुत्रकीउत्पत्तिअर्थ काम
में हूं तथा सर्वसर्पोंकेमध्यमें वासुकिनामासर्प में हूं ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ अस्ररूपजितनैकीआयुधहैं तिनसर्वआयुधोंकेमध्यविषे दधीचिकेअस्थियोंतैउत्पन्नहुआजोवज्रहैं सोवज्र मैंहूं ॥ तथा दुग्धकीप्राप्तिकरणेहारी जितनी
कीधेनुहैं ॥ तिनसर्वधेनुओंकेमध्यविषे मनवांछितकामोंकीप्राप्तिकरणेहारी तथासमुद्रकेमथनतैंप्रगटहुई जावसिष्ठकीकामधेनुहै साकामधेनु मैंहूं ॥ तथा मैथुनकीअ
भिलाषारूप सर्वकामोंकेमध्यविषे पुत्रकीउत्पत्तिवासतै जोकामरूपकंदर्पहै सोकामरूपकंदर्प मैंहूं ॥ इहां (प्रजनश्च) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार
पुत्रकीउत्पत्तितैंविना व्यर्थमैथुनकेहेतुरूपकामकीनिवृत्तिकूंबोधनकरेहै ॥ तथा सर्वसर्पोंकेमध्यविषे तिनसर्वसर्पोंकाराजाजोवासुकिहै सोवासुकि मैंहूं ॥ इहां सर्पजा
तितैं नागजातिभिन्नहोवैहै ॥ तहां सर्पतां विषवालेहोवैहै ॥ और नाग विषतैरहितहोवैहै इतनादोनोंविषेभेदहोवैहै ॥ यातैं (अनंतश्चास्मिनागानाम्) इसवक्ष्य
माणवचनविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २८ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अनंतश्चास्मिनागानांवरुणोयादसामहम् ॥ पितृणामर्यमाचास्मियमःसंयमतामहम् ॥ २९ ॥ अनंतः । च । अस्मि ।
नागानाम् । वरुणः । यादसाम् । अहं । पितृणाम् । अर्यमा । च । अस्मि । र्यमः । संयमताम् । अहम् ॥ २९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन नागोंके मध्यमै अनंतनाग मैं हूँ तथा जलचरोंकेमध्यमै वरुण मैंहूँ तथा पितरोंकेमध्यमै अर्यमा मैंहूँ^१ तथा नियमनकरणे
हान्योंकेमध्यमै यम मैंहूँ ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वनागोंकेमध्यविषे तिनसर्वनागोंकाराजारूप जोशेषनामा अनंतनागहै सोअनंतनाग मैंहूँ ॥ तथा जलविषेविचरणेहारे सर्वजीवोंकेमध्यवि
षे तिनसर्वजलचारीजीवोंकाराजारूप जोवरुणहै सोवरुण मैंहूँ ॥ तथा सर्वपितरोंकेमध्यविषे तिनसर्वपितरोंकाराजारूप जोअर्यमानामा पितरहै सोअर्यमा
मैंहूँ ॥ तथा धर्मअधर्मकेसुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकारिके अनुग्रहनिग्रहरूप संयमकूकरणेहारे जितनैकी समर्थपुरुषहैं ॥ तिनसर्वनियमनकर्त्ताओंकेमध्यविषे
यम मैंहूँ इति ॥ २९ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) प्रह्लादश्चास्मिदैत्यानांकालःकलयतामहम् ॥ मृगाणांचमृगेंद्रोहंवैनतेयश्चपक्षिणाम् ॥ ३० ॥ प्रह्लादः । च । अस्मि । दैत्या
नां । कालः । कलयताम् । अहं । मृगाणां । च । मृगेंद्रः । अहं । वैनतेयः । च । पक्षिणाम् ॥ ३० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन दैत्योंके
मध्यमै प्रह्लाद मैं^३ हूँ तथा संख्यागणनकरणेहान्योंकेमध्यमै काल मैंहूँ तथा मृगादिकपशुओंकेमध्यमै सिंह मैंहूँ तथा सर्वपक्षी
योंकेमध्यमै गरुड मैंहूँ ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन दितिकेवंशविषे उत्पन्नभयेजितनैकीदैत्यहैं ॥ तिनसर्वदैत्योंकेमध्यविषे आपणेसात्विकस्वभावकारिके सर्वप्राणीयोंकू अतिशयकारिके आनंदकी
प्राप्तिकरणेहारा जोप्रह्लादहै सोप्रह्लाद मैंहूँ ॥ तथा जितनैकीसंख्याकेगणनकरणेहारेहैं तिनसर्वोंकेमध्यविषे काल मैंहूँ ॥ तथा मृगतैआदिकेजितनैकीपशुहैं ॥
तिनमृगादिकसर्वपशुओंकेमध्यविषे तिनसर्वपशुओंकाराजाजोसिंहहै सोसिंह मैंहूँ ॥ तथा सर्वपक्षीयोंकेमध्यविषे तिनसर्वपक्षीयोंकाराजारूप तथाविनताकापुत्र
जोगरुडहै सोगरुड मैंहूँ इति ॥ ३० ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) पवनःपवतामस्मिरामःशस्त्रभृतामहम् ॥ झषाणामंकरश्चास्मिस्रोतसामस्मिजाह्नवी ॥ ३१ ॥ पवनः । पवताम् । अस्मि ।
रामः । शस्त्रभृताम् । अहं । झषाणां । मंकरः । च । अस्मि । स्रोतसाम् । अस्मि । जाह्नवी ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन वेग
वालोंकेमध्यमै वायु मैं^३ हूँ तथा शस्त्रधारीयोंकेमध्यमै राम मैंहूँ तथा मत्स्योंकेमध्यमै मकर मैं^३ हूँ तथा नदीयोंकेमध्यमै
श्रीगंगाजी मैंहूँ ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जितनैकीपावनकरणेहारेपदार्थहैं अथवा जितनैकीवेगवालेपदार्थहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषे पवन मैंहूं ॥ तथा युद्धविषेअत्यंतकुशल जितनैकी शस्त्रोंकेधारणकरणेहारे योद्धाहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषे सर्वराक्षसोंकेकुलकानाशकरणेहारा परमशूरवीर जोदशरथकापुत्र श्रीरामहै सोराम मैंहूं ॥ तथा सर्वमत्स्यों केमध्यविषे मकरनामामत्स्य मैंहूं ॥ तथा वेगकरिकैचलायमानहैजलजिनोंविषे ऐसीजे यमुनागोदावरी आदिकसर्वनदीयांहैं ॥ तिनसर्वनदीयोंकेमध्यविषे तिनसर्व नदीयोंतैंअत्यंतश्रेष्ठ श्रीगंगाजी मैंहूं इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) सर्गाणामादिरंतश्चमध्यंचैवाहमर्जुन ॥ अध्यात्मविद्याविद्यानांवादःप्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥ सर्गाणाम् । आदिः । अंतः । च । मध्यं । च । एव । अहम् । अर्जुन । अध्यात्मविद्या । विद्यानाम् । वादः । प्रवदताम् । अहम् ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥ हेअर्जुन अचेतनरूपकार्योंका उत्पत्ति तथा स्थिति तथा लय मैंपरमेश्वर हीहूं तथासर्वविद्याओंकेमध्यमै अध्यात्मविद्या मैंहूं तथा विवादकर्त्तापुरुषोंकीकथावोंकेमध्यमै वादनामाकथा मैंहूं ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अचेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनैकीउत्पत्तिमानकार्यहैं तिनसर्वकार्योंका उत्पत्ति तथास्थिति तथालय मैंपरमेश्वरहीहूं ॥ यद्यपि (अहमादिश्च मध्यंचभूतानामंतएवच) इसवचनविषे पूर्वभी श्रीभगवान् नैं आपणेकूं सर्वभूतोंका उत्पत्तिस्थितिलयरूप कथनकन्याथा ॥ तथापि पूर्वतों चेतनरूपकरिकैप्रसिद्धभू तोंकीहीं उत्पत्तिस्थितिलयरूपता कथनकरीथी ॥ और अबीईहां अचेतनरूपकरिकैप्रसिद्धभूतोंकी उत्पत्तिस्थिति लयरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं ईहां पुनरुक्तिदो षकी प्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ तथा सर्वविद्यावोंकेमध्यविषे मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुरूप तथाजीवब्रह्मके अभेदकाप्रतिपादक ऐसीजाउपनिषदरूप अध्यात्मविद्याहै ॥ साअध्यात्मविद्यामैंहूं ॥ तथा परस्परविवादकर्त्ता पुरुषोंकीजा वाद जल्प वितंडा यहतीनप्रकारकीकथाहैं ॥ तिनकथावोंकेमध्यविषे वादनामाकथा मैंहूं ॥ ईहां यद्यपि (प्रवदताम्) यहशब्द विवादकर्त्तापुरुषोंकाहीं वाचकहै ॥ तिनविवादकर्त्तापुरुषोंकीकथावोंकावाचकहैनहीं ॥ तथापि जैसे पूर्व (भूतानामस्मिचे तना) इसवचनविषे भूतानां इसशब्दकी तिनभूतसंबंधीपरिणामोंविषे लक्षणा अंगीकारकरीथी ॥ तैसे ईहांभी प्रवदतां इसशब्दकी तिनविवादकर्त्तापुरुषसंबंधीकथावों विषे लक्षणाअंगीकारकरणी उचितहै ॥ तहां परस्पर रागद्वेषतैरहित तथापरस्पर जयपराजयकीइच्छातैरहित तथापरस्पर तत्त्वबोधनकरणेकीइच्छावाले ऐसेजे एकगुरुकेपासिअध्ययनकरणेहारेदोशिष्यहैं अथवा गुरुकेशिष्यदोनोहैं ॥ तिनदोनोंकी जा तत्त्वनिर्णय पर्यंत परस्पर प्रश्नउत्तररूपकथाहै ताकानाम वादकथाहै ॥ और वादकथाकाफलरूपजो तत्त्वनिर्णयहै ॥ तिसतत्त्वनिर्णयका प्रतिवादियोंकेखंडनकरिकै संरक्षणकरणेवास्तै परस्पर जीतणेकीइच्छावालेदोपुरुषोंकी जो जय

पराजयमात्रपर्यंत परस्पर कथाहै ताकानाम जल्पकथाहै तथावितंडाकथाहै ॥ तहां छल जाति निग्रहस्थान इनतीनोंकरिकै परपक्षकूं दूषितकरणा इतनाअंशतों जल्पकथाविषे तथावितंडाकथाविषे समानहींहोवैहै ॥ तथापि वितंडाकथाविषेतों एकपुरुषनै आपणेपक्षका केवलस्थापनहींकरीताहै ॥ परपक्षविषे दूषणदर्शिता नहीं ॥ और अन्यपुरुषनैतों तिसपक्षविषे केवल दूषणहींदयीताहै ॥ आपणेमतकास्थापनकरीतानहीं ॥ और जल्पकथाविषेतों विवादकर्त्तादोनोंपुरुषोंनै आपणाआपणापक्ष स्थापनभीकरीताहै ॥ तथा दोनोंनै परपक्षकूं दूषितभीकरीताहै इतना जल्प वितंडाका परस्परभेदहै ॥ तहां अन्यअर्थकेअभिप्रायकरिकै उच्चारणकन्येहुएवचनका अन्यअर्थकल्पनाकरिकै तिसवक्तापुरुषकूं जोदूषणदेणाहै ताकानाम छलहै ॥ और असत्उत्तरकानाम जातिहै ॥ और पराजयकेहेतु कानाम निग्रहस्थानहै ॥ छल जाति निग्रहस्थान इनतीनोंका विभाग तथाउदाहरण न्यायग्रंथोंविषेप्रसिद्धहैं इति ॥ ३२ ॥ * किंच ॥

(मू० श्लो०) अक्षराणामकारोस्मिद्वंद्वःसामासिकस्यच ॥ अहमेवाक्षयःकालोधाताहंविश्वतोमुखः ॥ ३३ ॥ अक्षराणाम् । अकारः । अस्मि । द्वंद्वः । सामासिकस्य । च । अहम् । एव । अक्षयः । कालः । धाता । अहं । विश्वतोमुखः ॥ ३३ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन अक्षरोंके मध्यमै अकारअक्षर मैंहुं तथा समाससमूहकेमध्यमै द्वंद्वसमास मैंहुं तथा मैंपरमेश्वरहीं क्षयतैरहित कालरूपहुं तथा सर्वफलप्रदा तावोंके मध्यमै सर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाता अंतैर्यामीईश्वर मैंहुं ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्ववर्णरूपअक्षरोंकेमध्यविषे । (अकारोवैसर्वावाक्) इसश्रुतिनै सर्ववाक्कूपकरिकैकथनकन्याजोअकारअक्षरहै सोअकारअक्षर मैंहुं ॥ तथा सर्वसमासोंकाजोसमूहहै ताकानाम सामासिकहै ॥ ऐसे समाससमूहकेमध्यविषे उभयपदार्थप्रधानजो रामकृष्णौ यहद्वंद्वसमासहै सोद्वंद्वसमास मैंहुं ॥ तहां उपकुंभं इत्यादिकअव्ययीभाव समासतों पूर्वपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ और राजपुषःइत्यादिकतत्पुरुषसमासतों उत्तरपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ और चित्रगु इत्यादिकव हुव्रीहिसमासतों अन्यपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं द्वंद्वसमासतैभिन्न कोईभीसमास उभयपदार्थप्रधानहोवैनहीं ॥ यातैं तिनसर्वसमासोंतैं सोद्वंद्वसमास उत्कृष्टहै ॥ और क्षणघटिकादिकनाशवान्कालकाअभिमानिरूप तथातिसर्वकालकूंजानणेहारा जोपरमेश्वरनामा अक्षयकालहै ॥ जिसपरमेश्वररूपअक्षयकालकूं (कालकालोगुणीसर्वविधः) इत्यादिकश्रुतियां कालकाभीकालरूपकरिकैप्रतिपादनकरेहैं ॥ सोअक्षयकालरूपभी मैंपरमेश्वरहींहुं ॥ यद्यपि (कालःकलयतामहम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्ने पूर्वहीं आपणेकूं कालरूपताकथनकरीथी ॥ तथापि पूर्व श्रीभगवान्ने आपणेकूं नाशवान्कालरूपता कथनकरीथी ॥ और अबीईहां अक्षयकालरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं इसवचनविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और कन्येहुएकर्मकेफलकीप्राप्तिकरणेहारेजितनैकीराजादिकहैं ॥

तिनसर्वफलप्रदातावोकेमध्यविषे सर्वकर्मोकेफलप्रदाताजोईश्वरहै सोअंतर्यामीईश्वरमैंहूं ॥ ईहांकिसीटीकाविषेतों (द्वंद्वःसामासिकस्यच) इसवचनका यहअर्थ कथनकन्याहै ॥ वेदमंत्रोंकेअर्थका कथनकरणेवासतै जो विद्वान्पुरुषोंका अथवा गुरुशिष्यका एकत्र अवस्थानहै ताकानाम समासहै ॥ तासमासविषे तिन सर्वोंने जितनाकीअर्थ निर्णयकन्याहै तासर्वअर्थकानाम सामासिकहै ॥ तिससर्वअर्थकेमध्यविषे द्वंद्व कहीये रहस्यअर्थ मैंहूं ॥ तहां (द्वंद्वरहस्य) इससूत्रविषे शाब्दिकपुरुषोंने द्वंद्वशब्दकूं रहस्यअर्थकावाचक कहाहै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) मृत्युःसर्वहरश्चाहमुद्भवश्चभविष्यताम् ॥ कीर्तिःश्रीर्वाक्चनारीणांस्मृतिर्मेधाधृतिःक्षमा ॥ ३४ ॥ मृत्युः । सर्वहरः । च । अहम् । उद्भवः । च । भविष्यतां । कीर्तिः । श्रीः । वाक् । च । नारीणां । स्मृतिः । मेधा । धृतिः । क्षमा ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन तथा संहारकर्तावोकेमध्यमै सर्वकासंहारकरणेहारा मृत्यु मैंहुं तथा भावीकल्याणोंकेमध्यमै उत्कर्षरूपउद्भव मैंहुं तथा सर्व नारीयोंकेमध्यमै कीर्ति श्री वाक् स्मृति मेधा धृति क्षमा यहधर्मकीसप्तपत्नियां मैंहुं ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषेजितनैकीसंहारकरणेहारेहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषेसर्वजगत्कासंहारकरणेहारा जो मृत्युहै सोमृत्यु मैंहुं ॥ तथा होणेहारेजित नैकीकल्याणहैं ॥ तिनसर्वकल्याणोंकेमध्यविषे जोऐश्वर्यकाउत्कर्षरूप उद्भवहै सोउद्भव मैंहुं तथा सर्वनारीयोंकेमध्यविषे धर्मकीपत्नियारूप जेकीर्ति श्री वाक् स्मृति मेधा धृति क्षमा यहसप्तनारीयांहैं तेमैंहुं ॥ तहां इसपुरुषकाधर्मीपणाहैनिमित्तजिसविषे ऐसीजा प्रसिद्धपणेकरिकैं चारोंदिशावांविषेस्थितअनेकदे शोंमैंरहणेहारेलोकोंकेज्ञानकीविषयतारूप प्रख्यातिहै ताकानाम कीर्तिहै ॥ और धर्म अर्थ काम इनतीनोंकानाम श्रीहै ॥ अथवा शरीरकीशोभाकानाम श्रीहै ॥ अथवा उज्ज्वलकांतिकानाम श्रीहै ॥ और सर्वअर्थकूं प्रकाशकरणेहारी जासंस्कृतवाणीरूप सरस्वतीहै ताकानाम वाक्है ॥ और पूर्वअनुभवकन्येहुएअर्थकी जाबहुतकालकेपीछेभी स्मरणकरणेकीशक्तिहै ताकानाम स्मृतिहै ॥ और अनेकग्रंथोंकेअर्थधारणकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम मेधाहै ॥ और अनेकप्रकारकी पीडाकेप्राप्तहुएभी शरीरइंद्रियरूपसंघातकेस्थिरताकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम धृतिहै ॥ अथवा यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिकरावणेहारेकारणकरिकैं चपलताकेप्राप्त हुएभी तिसप्रवृत्तिनैनिवृत्तकरणेकी जाशक्तिहै ताकानाम क्षमाहै इति ॥ जिनकीर्तिआदि कसप्तनारीयोंकेआभासमात्रकेसंबंधकरिकैंभी यहजन सर्वलोकोंकरिकैं आदरकरणेयोग्यहोवैहैं ॥ ऐसीकीर्तिआदिकसप्त नारीयोंकूं सर्वनारीयोंतैंउत्तमपणा अतिप्रसिद्धहीहै ॥ इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) बृहत्सामतथासाम्नांगायत्रीछंदसामहम् ॥ मासानांमार्गशीर्षोहमृतूनांकुसुमाकरः ॥ ३५ ॥ बृहत्साम । तथा । साम्नां । गायत्री । छंदसाम् । अहं । मासानां । मार्गशीर्षः । अहम् । ऋतूनाम् । कुसुमाकरः ॥ ३५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन गीतिविशेषरूपसामों केमध्यमै बृहत्साम मेंहूं तथा छंदोंकेमध्यमै गायत्रीछंद मेंहूं तथा मासोंकेमध्यमै मार्गशीर्षमास मेंहूं तथा ऋतुवोंकेमध्यमै वसंतऋतु मेंहूं ॥ ३५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ऋगादिकच्यारिवेदोंकेमध्यविषे सामवेद मेंहूं याप्रकारकेवचनकारिके सामवेदकीउत्कृष्टता पूर्वहमने कथनकरीथी ॥ तिससामवेदविषेभी यहअन्यविशेषताहै ॥ ऋचावोंकेअक्षरोंविषेआरूढ जे गीतिविशेषरूपसामहैं ॥ तिनसर्वसामोंकेमध्यविषे (त्वामिद्धिहवामहे) इसऋचाविषेस्थित गीतिविशेषरूप तथा सर्वकाईश्वररूपकारिकेइंद्रकीस्तुतिरूपक जो बृहत्सामहै सोबृहत्साम मेंहूं ॥ और नियमपूर्वकहैंअक्षर तथापाद जिसके ताकानामछंदहै ॥ ऐसेछंदभावकरिकेविशिष्टजेवेदकीऋचाहैं ॥ तिनसर्वछंदोंकेमध्यविषे द्विजपणेकासंपादक जा चतुर्विंशतिअक्षरोंवाली गायत्रीहै जागायत्री (गायत्रीवाइदंसर्वभूतम्) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकेप्रतिपादितहै ऐसागायत्रीनामाछंद मेंहूं ॥ तथा द्वादशमासोंकेमध्यविषे अत्यंतशीतआतपतैरहितहोणेतैं सुखकाहेतु जोमार्गशीर्षमासहै सोमार्गशीर्षमास मेंहूं ॥ तथा षट्ऋतुवोंकेमध्यविषे सर्वसुगंधिवालेपुष्पोंकाआकारहोणेतैं अत्यंतरमणीक तथा (वसंतब्राह्मणमुपनयीत वसंतब्राह्मणोऽग्नीनादधीत वसंतज्योतिषायजेत) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकेप्रसिद्ध जोवसंतऋतुहै सोवसंतऋतु मेंहूं इति ॥ ३५ ॥ * ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) द्यूतंछलयतामस्मितेजस्तेजस्विनामहम् ॥ जयोस्मिव्यवसायोस्मिसत्त्वंसत्त्ववतामहम् ॥ ३६ ॥ द्यूतं । छलयताम् । अस्मि । तेजः । तेजस्विनाम् । अहं । जयः । अस्मि । व्यवसायः । अस्मि । सत्त्वं । सत्त्ववताम् । अहम् ॥ ३६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन छलकरणेहारेपुरुषोंका जूवारूपछल मेंहूं तथा तेजस्वीपुरुषोंका तेज मेंहूं तथाजयकरणेहारेपुरुषोंका जय मेंहूं तथाव्यवसायवालेपुरुषोंका व्यवसाय मेंहूं तथा सत्त्ववालेपुरुषोंका सत्त्व मेंहूं ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन परकावंचनरूपछलकेकरणेहारेजेधूर्तपुरुषहैं ॥ तिनछलवालेपुरुषोंका जो जूवारूपछलहैं जोजूवारूपछलसर्वस्वहरणकरणेकाकारणहै सोजूवारूपछल मेंहूं ॥ तथा अत्यंतउग्रप्रभाववालेजेतेजस्वीपुरुषहैं ॥ तिनतेजस्वीपुरुषोंका जोअप्रतिहतआज्ञारूपतेजहै सोतेज मेंहूं ॥ तथा जयकरणेहारेपुरुषोंका जो पराजयहुएपुरुषोंकीअपेक्षाकरिके उत्कृष्टतारूपजयहै सोजय मेंहूं ॥ तथा व्यवसायवालेपुरुषोंका जो नियमतैंफलकीप्राप्तिकरणेहारा उद्यमरूपव्यवसायहै सो

व्यवसाय मैं हूँ ॥ तथा सात्विकपुरुषोंका जो धर्मज्ञानवैराग्यऐश्वर्यतारूपसत्त्वहै ॥ अर्थात् सत्त्वगुणकार्यहै सोसत्त्व मैं हूँ इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) वृष्णीनांवासुदेवोस्मिपांडवानांधनंजयः ॥ मुनीनामप्यहंव्यासःकवीनामुशनाकविः ॥ ३७ ॥ वृष्णीनाम् । वासुदेवः ।
अस्मि । पांडवानाम् । धनंजयः । मुनीनाम् । अपि । अहम् । व्यासः । कवीनाम् । उशनाकविः ॥ ३७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन यादवोंकेमध्यमें वसुदेवकापुत्रकृष्ण मैं हूँ तथा पांडवोंकेमध्यमें धनंजय मैं हूँ तथा मुनियोंकेमध्यमें व्यासमुनि मैं हूँ तथा
कवियोंकेमध्यमें शुक्रकवि मैं हूँ ॥ ३७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वयादवोंकेमध्यविषे वसुदेवकापुत्ररूपकरिकेप्रसिद्ध तथातुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा यहकृष्णमैं हूँ ॥ तथा सर्वपांडवोंकेमध्यविषे
धनंजयनामाजोतूअर्जुनहै सोमैं हूँ ॥ तथा मननशीलमुनियोंकेमध्यविषे श्रीव्यासमुनि मैं हूँ ॥ तथा सूक्ष्मअर्थकेविवेककरणेहारेकवियोंकेमध्यविषे शुक्रनामाकवि
मैं हूँ इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) दंडोदमयतामस्मिनीतिरस्मिजिगीषताम् ॥ मौनंचैवास्मिगुह्यानांज्ञानंज्ञानवतामहम् ॥ ३८ ॥ दंडः । दमयताम् ।
अस्मि । नीतिः । अस्मि । जिगीषतां । मौनम् । च । एव । अस्मि । गुह्यानां । ज्ञानम् । ज्ञानवताम् । अहम् ॥ ३८ ॥ (इतिप०) ॥
हेअर्जुन शिक्षाकरणेहारेपुरुषोंका दंड मैं हूँ तथा जीतनेकीइच्छावालेपुरुषोंका न्यायरूपनीति मैं हूँ तथा गुह्यअर्थोंका मौन मैं हूँ
तथा ज्ञानवालेपुरुषोंका ज्ञान मैं हूँ ॥ ३८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अशिक्षितदुष्टपुरुषोंकूँ कुमार्गतैनिवृत्तकरिके सुमार्गविषे प्रवृत्तकरणेहारे जेराजादिकपुरुषहैं ॥ तिनराजादिकोंका जो दुष्टपुरुषोंकूँ तिसकुमार्गतै
निवृत्तकरणेकाहेतुरूपदंडहै सोदंड मैं हूँ ॥ तथा जीतनेकीइच्छावान्पुरुषोंका जो जयकेउपायकाप्रकाशक न्यायरूपनीतिहै सानीति मैं हूँ ॥ तथा गुह्यअर्थोंकेगोप
राखणेकाहेतुरूप जो वाक्इंद्रियकानिग्रहरूपमौनहै ॥ सोमौन मैं हूँ ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष वाक्इंद्रियकानिग्रहकरिके तूष्णींस्थितहोवैहै ॥ तिसपुरुषकेअंतरके
अभिप्रायकूँ कोईभीजानिसकतानहीं ॥ यातै सोवाणीकानिग्रहरूपमौन अर्थकेगोपराखणेकाहेतुहै इति ॥ अथवा इसका यहअर्थकरणा ॥ गोप्यपदार्थोंकेमध्यविषे
संन्याससहित श्रवणमननपूर्वक जो आत्माकानिदिध्यासनरूपमौनहै सोमौन मैं हूँ ॥ तथा ज्ञानवाले सर्वज्ञानीपुरुषोंका जो वेदांतशास्त्रकेश्रवणमनननिदिध्यासनकरिके
जन्य तथासर्वअज्ञानकाविरोधी मैंब्रह्मरूपहूँ याप्रकारका आत्मज्ञानहै सोआत्मज्ञानमैं हूँ इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) यच्चापिसर्वभूतानां बीजंतदहमर्जुन ॥ नतदस्ति विनायत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥ ३९ ॥ यत् । च । अपि । सर्वभूता
नाम् । बीजम् । तत् । अहम् । अर्जुन । न । तत् । अस्ति । विना । यत् । स्यात् । मया । भूतम् । चराचरम् ॥ ३९ ॥ (इति प०) ॥
हे अर्जुन तथा जोचेतन ईनसर्वभूतोंका कारण है सो कारण भी मैं ही हूँ मैं परमेश्वर तैं विना जो चर अचर रूप वस्तु होवै सो वस्तु
नहीं है ॥ ३९ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन जैसे प्रसिद्ध वृक्षों के प्ररोह का कारण बीज होवै है ॥ तैसे इन सर्वभूतों के प्ररोह का कारण रूप जो माया उपहित चेतन रूप बीज हैं सो बीज रूप कारण भी मैं
ही हूँ ॥ हे अर्जुन मैं परमेश्वर तैं विना जो कोई चर अचर रूप वस्तु विद्यमान होवै सो ऐसा कोई वस्तु है नहीं ॥ किंतु ते सर्वभूत मैं बीज रूप परमेश्वर का कार्य होने तैं मैं सत्ता स्फुरण
रूप परमेश्वर करि कै ही व्याप्त हैं इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ अब इस विभूति प्रकरण के अर्थ का उपसंहार करता हुआ श्री भगवान् तिस विभूतिकूं संक्षेप तैं कथन करे है ॥

(मू० श्लो०) नांतोस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ॥ एष तू देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥ ४० ॥ न । अंतः । अस्ति । मम ।
दिव्यानाम् । विभूतीनाम् । परंतप । एषः । तू । उद्देशतः । प्रोक्तः । विभूतेः । विस्तरः । मया ॥ ४० ॥ (इति पदच्छेदः) हे अ
र्जुन मैं परमेश्वर के दिव्य विभूतियों का कोई अंत नहीं है । और यह जो हम नैं तुमारे प्रति विभूतिका विस्तार कथन कन्या है
सो एक देश करि कै कथन कन्या है ॥ ४० ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे परंतप अर्थात् हे कामक्रोधादिक शत्रुओं का तापकरणे हारा अर्जुन मैं परमेश्वर का तिन दिव्य विभूतियों का कोई अंत नहीं है अर्थात् ते सर्व विभूतियां इत
नीया हैं या प्रकार की संख्या तिन विभूतियों की नहीं है ॥ या तैं सर्वज्ञ पुरुषों नैं भी साहमारे विभूतियों की संख्या जानने कूं वा कहने कूं समर्थ नहीं होईता ॥ शंका ॥
हे भगवन् जबी सर्वज्ञ पुरुष भी तिन विभूतियों के कहने कूं समर्थ नहीं है ॥ तबी (आदित्यानामहं विष्णुः) इत्यादिक वचनों करि कै ते आपणी विभूतियां आप कैसे
कहते भये हो ॥ ऐसी अर्जुन की शंका के हुए श्री भगवान् कहै है (एष तु इति) हे अर्जुन यह जो हम नैं तुमारे प्रति आपणी विभूतिका विस्तार कथन कन्या है ॥ सो भी
किसी एक देश करि कै कथन कन्या है इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ॥ तत्तदेवावगच्छत्वं मम तेजोऽंशसंभवम् ॥ ४१ ॥ यत् । यत् । विभूतिमत् ।
सत्त्वं । श्रीमत् । ऊर्जितम् । एव । वा । तत् । तत् । एवं । अवगच्छ । त्वम् । मम तेजोऽंशसंभवम् ॥ ४१ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥